संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१३
वर्ष : २३ अंक : ३
(निरंतर अंक : २४९)

सन् २००४ में शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी को गिरफ्तार कर 'वे दोषी हैं' ऐसा घृणित माहौल खड़ा किया गया था । जब-जब लोक-मांगल्य में रत हमारे संत-समाज व संस्कृति पर इस प्रकार के आक्रमण हुए, तब-तब पूज्य बापूजी संस्कृति-रक्षार्थ आवाज बुलंद करते रहे हैं। अब जब पूज्य बापूजी को षड्यंत्र के तहत गिरफ्तार किया गया है तो करोड़ों की संख्या में देश की जनता तथा संत-समाज सड़कों पर उतर आये हैं।

संत-सम्मेलन, सूरत

जंतर-मंतर, दिल्ली

साजिश के तहत की हुई पूज्य बापूजी की गिरफ्तारी का विरोध करने हेतु दिल्ली में एकत्र लाखों का जन-समुदाय

ऐसा क्यों ?

लड़की की शिकायत के आधार पर दर्ज पुलिस एफआईआर में बलात्कार का आरोप नहीं →	तो क्यों लगायी गयी बलात्कार की गैर-जमानती धारा ?
लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट - सामान्य →	तो क्यों किया गया मीडिया द्वारा ऐसा दुष्प्रचार कि बलात्कार की पुष्टि हुई है ?
लड़की उत्तर प्रदेश की, पढ़ रही थी मध्य प्रदेश में, तथाकथित घटना जोधपुर (राज.) की बता रही है →	तो फिर एफआईआर ५ दिन बाद दिल्ली के कमला मार्केट थाने में रात को २.४५ बजे क्यों दर्ज करायी ?
''हमें कोई भी सीडी या विडियो क्लिप नहीं मिली है। ये तथ्यहीन बातें हैं।'' - पुलिस उपायुक्त अजय पाल लाम्बा →	तो क्यों किया गया अश्लील सीडी प्राप्त होने का झूठा दुष्प्रचार ?
तांत्रिक विधि एवं अन्य आरोप, जिनको सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज किया था →	उन्हींको कुछ मीडिया द्वारा मिर्च-मसाला लगा के फिर से क्यों प्रसारित किया जा रहा है ?

क्या अब भी इस साजिश की पोल खुलने में कुछ बाकी है ?

घेराबंदी से ग्रस्त हिन्दुओ ! झूठे आरोपों व कुप्रचार के माध्यम से तुम्हारे मार्गदर्शक व संत योजनाबद्ध रीति से समाप्त कर दिये जायेंगे । जब तक यह बात तुम्हारी समझ में आयेगी, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी । अतः सावधान ! - प्रसिद्ध न्यायविद् श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी

संतों पर अत्याचार अर्थात् संस्कृति पर कुठाराघात

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

'धर्म रक्षा मंच' संकल्पसभा के अध्यक्ष पूज्य बापूजी

''यह (चारित्रिक) आरोप बेबुनियाद है, साजिश है। मेरी सच्चाई मेरे साथ है। साँच को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं। भारतीय संस्कृति के खिलाफ बड़ा गहरा षड्यंत्र चल रहा है। अतः भारत के सभी हितैषियों को संस्कृति की रक्षा में एकजुट होना पड़ेगा।''

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

''पूज्य बापूजी के ऊपर जो कीचड़ उछाला गया है, जो सरासर झूठे आरोप लगाये गये हैं यह देख के, सुन के हरेक हिन्दू के मन को पीड़ा हुई है।''

- श्री अभय वर्तक, राष्ट्रीय प्रवक्ता, 'सनातन संस्था'

''अखिल भारतीय संत समिति के संत पूज्य बापूजी के साथ हैं।''

- 'अखिल भारतीय संत समिति' के राष्ट्रीय महामंत्री महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी

''देशभर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम राष्ट्रीय कर्तव्य है, जिसने हमारे देश को आज तक जीवित रखा है और इसके बल पर हम उज्ज्वल भविष्य का सपना देख रहे हैं। पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, सर्वधर्म-समभाव की शिक्षा दे रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं तथा अच्छे और बुरे में भेद करना सिखा रहे हैं। मैं बापूजी के चरणों में विनम्र होकर नमन करना चाहता हूँ।''

- श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

''पूरे देश के भीतर एक प्रकार का वातावरण बनाया जा रहा है। हमारे संतों पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं। हमारे पूज्य संत आशारामजी बापू की ७३ वर्ष उम्र है, उनके ऊपर रेप का चार्ज लगाकर उनको गिरफ्तार करते हो ? यह गिरफ्तारी हिन्दू समाज को बताने के लिए है कि तुम्हारे अंदर जो संतों का सम्मान है, निष्ठा है, जो श्रद्धा का भाव है इसको हम मिटाकर रख देंगे।''

- वि.हि.प. के मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहलजी

''आज इस दुनिया की बेईमानी का, दुष्कृत्यों का सबसे बड़ा शत्रु अगर कोई है तो बापूजी हैं। इसलिए उनके ऊपर सबसे ज्यादा हमले (षड्यंत्र) हो रहे हैं।''

- 'सुदर्शन चैनल' के चेयरमैन श्री सुरेश चव्हाणके

''संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं, संत उनके साथ हैं।''

- भाजपा उपाध्यक्ष साध्वी उमा भारती

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०३
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४९)
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१३
मूल्य : ₹ ६
भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ १०० / -
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५ / -
(४) आजीवन : ₹ ५०० / -

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५०० / -

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

◆ विभिन्न टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

रोज प्रात: ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोपहर २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)

रोज सुबह ७.०० बजे

आश्रम इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण

→ इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण ←

रोज सुबह ९.४० बजे

रोज रात्रि ९.२० बजे

रोज दोपहर २.०० बजे

षड्यंत्र के खिलाफ संत-समाज का शंखनाद

''मैं आज पूर्णतः बिके हुए कुछ लोगों से सवाल करना चाहूँगा कि जब संविधान हमें कहता है कि जब तक दोष साबित न हो जाय तब तक उसे दोषी न माना जायेगा तो आपने हमारे संत आशारामजी बापू को दोषी कैसे कहा ? यह भारत के संविधान की अवमानना है । ६ करोड़ अनुयायियों के दिलों में तलवार घोंपना - क्या यह भारत के संविधान की हत्या नहीं है ?

जगद्गुरु जयेन्द्र सरस्वती पर भी आपने आरोप लगाया, सर्वोच्च न्यायालय में वे निर्दोष साबित हुए । क्यों नहीं मीडिया ने दिखाया ? आज तक आपने माफी क्यों नहीं माँगी ? हमारे संत-समाज का बहुत बड़ा संघ है । ये 'शांति-शांति-शांति...' कहते हैं इसलिए इनको इतना शांत मत समझो, क्रांति... क्रांति... !''

- महामंडलेश्वर आचार्य श्री सुनील शास्त्रीजी महाराज

''हमारे परम पूज्य बापूजी भारत के गौरव हैं, हिन्दू धर्म के गौरव हैं।''

- स्वामी श्री ओमजी महाराज, अध्यक्ष, 'हिन्दू राष्ट्रनिर्माण महासंघ'

''दुष्ट लोग यह जो अपमान कर रहे हैं वह बापूजी का अपमान नहीं है, हिन्दू समाज का अपमान है, भारत का अपमान है।''

श्री प्रमोद मुतालिक, अध्यक्ष, 'श्रीराम सेना'
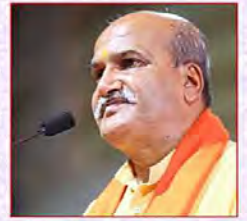
''जो संस्थाएँ भारत के विकास का काम कर रही हैं, उन पर कुठाराघात किया जा रहा है। पूज्य बापूजी जैसे महापुरुष पर ऐसे तुच्छ आरोप लगाये जाते हैं ! हम यह सहन नहीं करेंगे।''

- श्री महंत स्वामी विश्वेश्वरानंदजी, अध्यक्ष, 'अखिल भारतीय संत समिति', गुजरात राज्य

''पूज्य बापूजी हमारे विश्वगुरु हैं। **जहाँ राम तहाँ नहीं काम ।** जहाँ साक्षात् आशाराम बैठे हों वहाँ काम का क्या काम है ? ये जितना दुष्प्रचार है उसके पीछे पैसा है, राजनैतिक व धर्मांतरण करनेवाली ताकत है और अनेक एनजीओज् का रूप लेकर फैले हुए भारतीय संस्कृति को नष्ट करनेवाले षड्यंत्रकारी हैं।''

- महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी महाराज

''पूज्य बापूजी जैसे संत तो कामवासनाओं से हजार कोस दूर रहते हैं। उन पर ऐसे घृणित आरोप लगवाना कितना दुर्भाग्यपूर्ण है।''

- श्री परमेश्वरदासजी महाराज, उपाध्यक्ष, 'अखिल भारतीय संत समिति'

''कुछ राजनेता और बिकाऊ मीडियावाले देश को बरबाद करने में लगे हुए हैं, हमारे संतों का अपमान करने में लगे हुए हैं। अब आप जागो और जगाओ, गलत प्रचार पर ध्यान मत दो।''

- डॉ. मस्त बाबाजी, 'श्रीकृष्ण प्रणामी सम्प्रदाय'

''लाखों-करोड़ों भक्तों को व्यसन से मुक्त करा देनेवाले, अध्यात्म का दीपक जगानेवाले हैं बापू। उन पर ये आरोप गहरी साजिश है।''

- युवा क्रांतिद्रष्टा संत दिनेश भारतीजी

''यकीन मानो बापूजी सच्चे हैं, अच्छे हैं, अल्लाह के नेक बंदे हैं।''

- मौलाना बिलाल, अब्दुल करीम कादरी

''यह बापूजी पर हमला नहीं है, यह संत-समाज पर हमला है।''

-महात्यागी रामबालकदासजी, अधिपति, पाटेश्वर धाम

''एक षड्यंत्र चल रहा है, देश की जनता को गुमराह कर रहे हैं। पूज्य बापूजी के ऊपर ये विदेशी ताकतों ने, षड्यंत्रकारियों ने जो षड्यंत्र इस बार चलाया है, वह बहुत ही निंदनीय है। आज यह हमारे लिए बड़े दुःख की बात है कि बापूजी को इन्होंने बिना किसी ठोस तथ्य के जोधपुर के जेल में इतने समय से रखा हुआ है और ऐसा सलूक तो इन्होंने कभी आतंकवादियों के साथ नहीं किया जैसा ये बापूजी के साथ कर रहे हैं। बापूजी हमारे राष्ट्रसंत हैं और षड्यंत्र के तहत उनको जेल में रखा हुआ है। और हम यह आवाज उठाना चाहते हैं कि जल्दी-से-जल्दी बापूजी को जेल से रिहा करें।''

- महंत श्री घनश्यामानंदजी महाराज, अध्यक्ष, 'डिवाइन वैदिक एसोसिएशन'

सीडी, डीवीडी भी उपलब्ध !

पूज्य बापूजी के खिलाफ किये जा रहे षड्यंत्र की हकीकत जानने के लिए देखिये सितम्बर माह की 'ऋषि दर्शन' डीवीडी। षड्यंत्र पर अलग सीडी भी उपलब्ध है। इसे साधु-संतों, मठ-मंदिरों, सामाजिक संस्थाओं एवं कार्यालयों तक पहुँचायें। समाज के प्रमुख व्यक्तियों एवं जन-जन तक पहुँचाने की सेवा करें। इसे केबलों पर चलवायें, सार्वजनिक स्थानों में दिखायें एवं सत्य का प्रचार करें।

आप कहते हैं...

''साधु-संतों के बारे में अनेक आरोप लगाने की परम्परा देश में तेज हुई है । आपने किसी मौलवी पर, क्रिश्चियन पादरी पर आरोप लगाते हुए देखा है ? और आशारामजी बापू का जीवन बहुत सात्त्विक संत का जीवन है।''

- श्री प्रवीण तोगड़िया, अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, वि.हि.प.

''बापू के खिलाफ राजनैतिक साजिश हो रही है । प्रारम्भ से ही वे एक राजनैतिक पार्टी के निशाने पर हैं ।''

- डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छ.ग.

''पूज्य बापूजी को बेवजह परेशान न किया जाय।''

- श्री उद्धव ठाकरे, शिवसेना प्रमुख

किसीके भी ऊपर इस प्रकार का आरोप लगाना आसान है। आज संत आशारामजी के अनुयायी दुनियाभर में हैं। ऐसी घटना के कारण उनकी छवि को कितनी ठेस पहुँचेगी यह समझने की बात है। घटना बताते हैं जोधपुर (राज.) की और ५ दिन तक लड़की व उसके परिवारवाले दिल्ली में रहे, कहाँ-कहाँ रहे, किसीको नहीं पता । उसके बाद दिल्ली में रिपोर्ट लिखवायी, राजस्थान में क्यों नहीं ? यह साजिश ही हो सकती है।

- श्री कैलाश विजयवर्गीय, वाणिज्य, उद्योग एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री (म.प्र.)

''मेरा मानना है कि किसी-न-किसी षड्यंत्र का शिकार माननीय आशारामजी बापू को किया जा रहा है और इसकी निष्पक्ष जाँच होगी तो ऐसे बिंदु निकलकर आयेंगे जिनसे हमारे बापू निर्दोष साबित होंगे ।''

- श्री नरोत्तम मिश्र, स्वास्थ्य मंत्री (म.प्र.)

इतिहास सावधान करता है

भारतीय संस्कृति पर पिछली कुछ सदियों से लगातार विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। जो भी महापुरुष वैदिक संस्कृति की पताका फहराते, उनके खिलाफ षड्यंत्र रचे जाते और उन्हें बदनाम करने व सताने के भरसक प्रयास किये जाते लेकिन वे षड्यंत्रकारी लोग उनका बाल भी बाँका न कर सके, उलटा उनके कुप्रचार से वे संत ही और अधिक महिमामंडित हुए। संत को सतानेवाले, उनकी निंदा करनेवाले पर प्रकृति का कोप निश्चित रूप से होता है।

स्वार्थ आदमी को गुमराह कर देता है।

''आज इस दुनिया की बेईमानी का, दुष्कृत्यों का सबसे बड़ा शत्रु अगर कोई है तो बापूजी हैं। इसलिए उनके ऊपर सबसे ज्यादा हमले (षड्यंत्र) हो रहे हैं।

सूरत आश्रम में २००६ के गुरुपूर्णिमा पर मैंने कैमरे के सामने कहा था कि 'बापूजी ! अभी आपके खिलाफ षड्यंत्र चल रहे हैं और जल्दी ही आपकी ऐसी-ऐसी बदनामी होगी कि आप सोच भी नहीं सकते।' उस समय मैं डाँग (गुजरात) क्षेत्र से आया था, वहाँ पर बापूजी ने धर्मांतरण रोकने का बहुत बड़ा काम किया था। पिछले १० सालों में इस देश को गुलाम बनाने से रोकने में सबसे जो बड़ी शक्ति है तो वह आशारामजी बापू हैं। इसी कारण ये सबसे ज्यादा निशाने पर हैं। ऐसे में हम लोगों का पूज्य बापूजी का साथ देना जरूरी है।

मैं यह कहूँगा कि ये सारे चैनल दो कारणों से ऐसा दुष्प्रचार करते हैं। एक तो बड़ा कारण है स्पोंसरशिप, दूसरा कारण है टीआरपी। एक आसान काम है, जब भी ऐसी न्यूज शुरू हो तो देश के करोड़ों भक्त उन चैनलों को बंद कर दें। अगर ६ करोड़ साधक ऐसे चैनलों को बंद कर दें तो ये सारे अनाप-शनाप बोलनेवाले बंद हो जायेंगे। दूसरा, सोशल मीडिया में ऐसे चैनलों के जो पेज हैं उनको डिस्लाइक करें, उस पर अपनी बातों को रखें। तीसरा, ऐसे सम्मेलन तहसील, जिला, राज्य स्तर पर, विभिन्न जगहों पर किये जायें। आखिर आज भी टीवी से कई गुना ज्यादा प्रत्यक्ष सत्संग का परिणाम होता है। सत्य और मजबूत होगा। इस लड़ाई के लिए मीडिया में और अच्छे लोगों की जरूरत है, 'सुदर्शन' जैसे कई चैनलों की आवश्यकता है।''

- *श्री सुरेश चव्हाणके, चेयरमैन, 'सुदर्शन चैनल'*

संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश

संत सताये तीनों जायें, तेज बल और वंश।
ऐसे ऐसे कई गये, रावण कौरव और कंस॥

सूक्ष्म जगत में संतों की आहें बहुत काम करती हैं। यह शक्ति इलेक्ट्रॉनिक शक्ति से भी ज्यादा कार्य करती है।

गुजरात में द्वारका के एक संत स्वामी केशवानंदजी के साथ ऐसा ही जुल्म हुआ था। उनको बलात्कार के झूठे मामले में घसीटा गया था और १२ साल की सजा दी गयी थी। अधिकारी आपस में मिल गये थे। केशवानंदजी को मीडिया के द्वारा इतना बदनाम किया गया था कि कोई वकील उनकी तरफ से केस लड़ने को तैयार नहीं हुआ। आखिर उनको जेल भेज दिया गया। लेकिन जिस अधिकारी ने यह षड्यंत्र रचा था उसको गोधरा में चीते ने मार डाला। दूसरा अधिकारी अशांति की खाई में जा गिरा, तीसरे अधिकारी को कुछ और भोगना पड़ा... वे तो तबाह हो गये, परंतु केशवानंदजी को तो अभी भी वहाँ के लोग मानते हैं, उनका आदर-सत्कार करते हैं। १२ साल की सजा में से ७ साल उन्होंने भोगे और बाद में सच्चाई सामने आयी तब अपील करने पर उन्हें निर्दोष घोषित कर दिया गया।

हे सनातन संस्कृति के सपूतो ! ऐसे लोगों को अनीश्वरवादी कहो या अपना अहंकार सिद्ध करने के लिए किसी भी हद तक जानेवाले तमस्-प्रधान प्रकृति के कूटनीतिज्ञ लोग कहो, उनके विरुद्ध लोहा लेने के लिए अब हम सभीको तैयार रहना पड़ेगा। ॐ... ॐ... ॐ... जुल्म करना तो पाप है, पर जुल्म सहना दुगना पाप है। अब हमें उद्यम करना होगा, अपनी संस्कृति की रक्षा एवं सेवा के लिए हमें साहसी बनना होगा। धैर्यवान होकर, आगे-पीछे का गणित लगाकर हमें कदम आगे रखने होंगे। उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम - ये छः सद्गुण तो हमारे अपने घर का खजाना है। अब उस खजाने को खोलना है।

अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने सड़कों पर उतरे विभिन्न संगठन

पूज्य बापूजी पर झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगाकर उन्हें जेल भेजने के षड्यंत्र के विरोध में अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संगठन सड़कों पर उतर आये हैं तथा विभिन्न स्थानों में अलग-अलग माध्यमों से शांतिपूर्ण ढंग से विरोध व्यक्त कर रहे हैं। देश के विभिन्न राज्यों में श्री योग वेदांत सेवा समिति, युवा सेवा संघ, हिन्दू जनजागृति समिति, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सनातन संस्था, जैन राष्ट्रीय युवक सेना, विश्व लोकार्पण बहुउद्देशीय सेवा संघ, राष्ट्रीय वारकरी सेना, भारत स्वाभिमान, संकल्प मित्र मंडल, हिन्दू साम्राज्य सेना, बजरंग दल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिवसेना, पतंजलि योग समिति, सावरकर प्रतिष्ठान, हिन्दू विधिज्ञ परिषद, श्रीराम सेना, हिन्दू एकता आंदोलन, स्वातंत्र्यवीर सावरकर स्मृति प्रतिष्ठान, समस्त हिन्दू आघाड़ी आदि अनेकानेक संगठनों की विभिन्न शाखाओं ने विरोध-प्रदर्शनों द्वारा समाज को सच्चाई से अवगत कराया तथा बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र एवं दुष्प्रचार करनेवालों के प्रति विरोध जताया।

विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, धर्म जागरण, हिन्दू क्रांति दल, हिन्दू जागृति मंच, युवा जागृति मंच, भगवान वाल्मीकि युवा दल, सत्गुरु कबीर मुख मंदिर ट्रस्ट, हिन्दू धर्म रक्षा समिति, सनातन धर्म सभा और गीता जयंती उत्सव सभा के अधिकारियों ने जालंधर में प्रेस कॉन्फ्रेंस की और अगले दिन विशाल रैली द्वारा विरोध-प्रदर्शन किया।

जंतर-मंतर, दिल्ली में सनातन संस्कृति दल, सार्थक महिला संगठन आदि विभिन्न संगठनों के तत्त्वावधान में सत्याग्रह एवं विशाल संत-सम्मेलन हुआ। इसमें देश के अनेक संतों ने निर्दोष पूज्य बापूजी पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायी एवं उनकी शीघ्र रिहाई की माँग की।

पंजाब में वहाँ के प्रसिद्ध संतों ने बापूजी पर लगे आरोपों तथा षड्यंत्र के विरोध में संत-सम्मेलन कर अपनी आवाज बुलंद की। इस संत सम्मेलन में 'प्रधान विरक्त वैष्णव मंडल' के महामंडलेश्वर १००८ महंत श्री गंगादासजी महाराज, 'षड्दर्शन संत समाज' के महासचिव महंत शम्भूनाथजी शास्त्री, उदासीन आश्रम के महंत बाबा राजकिशोरजी, 'षड्दर्शन संत समाज' के सचिव महंत केशवदासजी महाराज, 'विरक्त वैष्णव मंडल' के सचिव महंत बलिरामदासजी महाराज, 'विरक्त वैष्णव मंडल' के कार्यकारी सदस्य स्वामी रामचन्द्रदासजी महाराज आदि अनेक संत उपस्थित थे।

स्थानाभाव के कारण सभी संगठनों एवं स्थानों के नाम यहाँ नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक स्थानों के विरोध-प्रदर्शन एवं रैलियों की तस्वीरें आप इसी पत्रिका के मुखपृष्ठों एवं आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org पर अवश्य देखें।

(हर मानवताप्रेमी, देशप्रेमी इसे अवश्य पढ़े ।)

पूज्य बापूजी को बदनाम करने का सुनियोजित षड्यंत्र

पिछले ५० वर्षों से 'संयम-साधना व सत्संग' की महिमा को जन-जन तक पहुँचानेवाले एवं पिछले ८ वर्षों से विश्वभर के युवानों को ओज-तेज का नाश करनेवाले 'वेलेंटाइन डे' की जगह १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने की सुंदर प्रेरणा देनेवाले पूज्य संत श्री आशारामजी बापू संयम, स्नेह, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मनिष्ठा व लोक-कल्याण के मूर्तिमंत स्वरूप हैं। परंतु भारतीय संस्कृति के खिलाफ कार्य करनेवाली विधर्मी ताकतें तथा जिन्हें भारतवासियों की नैतिक एवं सांस्कृतिक उन्नति से भारी नुकसान होता है वे मीडिया के माध्यम से करोड़ों रुपये खर्च करके भी समय-समय पर संतश्री के खिलाफ बड़े-बड़े षड्यंत्र करते आये हैं। ऐसे ही एक सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत २० अगस्त को उत्तर प्रदेश की एक लड़की को मोहरा बनाकर उसके द्वारा छेड़खानी का झूठा आरोप लगवाया गया और फैलाया गया कि बलात्कार का आरोप लगाया गया है। अधिकांश मीडिया द्वारा झूठी, निराधार व बापूजी की छवि खराब करनेवाली खबरें फैलाकर करोड़ों देशवासियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचायी गयी।

कैसे शुरू हुआ घिनौना षड्यंत्र ?

उत्तर प्रदेश की लड़की, जो मध्य प्रदेश में पढ़ रही थी, जोधपुर (राजस्थान) में उसके साथ छेड़खानी हुई ऐसी एफआईआर दर्ज कराती है, कहाँ जाकर ? दिल्ली के भीतर कमला मार्केट थाने में पहुँचकर ! वह भी ५ दिन बाद रात २-४५ बजे !

लड़की की एफआईआर में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से कहीं भी किसी भी तरह से दुष्कर्म (रेप) का उल्लेख नहीं है। लेकिन प्रसार-माध्यमों का सहारा लेकर 'रेप हुआ है' व 'मेडिकल टेस्ट में रेप की पुष्टि हुई है' ऐसी झूठी खबरें फैलायी गयीं।

लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट में रेप की बात को पूरी तरह खारिज कर दिया गया है एवं इसके बावजूद रेप की गैर-जमानती धारा ३७६ लगायी गयी, जो पूज्य बापूजी को बदनाम करने की सोची-समझी साजिश है। इस बात के लिए राजस्थान पुलिस ने दिल्ली पुलिस को फटकार लगायी तथा जोधपुर पुलिस डीसीपी अजय पाल लाम्बा ने स्पष्ट रूप से स्वीकार भी किया कि दिल्ली पुलिस ने केस गलत

तरीके से दर्ज किया है।

दिनांक २७ अगस्त को पूज्यश्री इंदौर आश्रम में थे। वहाँ 'समन्स' थमाया गया कि ३० तारीख तक जोधपुर आना है। उसी समय बापूजी ने कई महत्त्वपूर्ण कारण दर्शाते हुए कुछ मोहलत माँगी थी और 'समन्स' थमानेवाले ने उस अर्जी पर अपने हस्ताक्षर भी कर दिये थे कि 'हमअर्जी को आगे तक पहुँचायेंगे।' बापूजी पूर्वनिर्धारित जन्माष्टमी कार्यक्रम के निमित्त २८ अगस्त को सूरत आश्रम में थे।

अपने कर्मयोगी शिष्य का अंतिम संस्कार करने हेतु भोपाल पहुँचे

मध्य प्रदेश के कई आश्रमों के सेवा-प्रभारी, सेवानिष्ठ साधक, भोपाल आश्रम के वरिष्ठ पदाधिकारी व नारायण साँईं के ससुर श्री देव कृष्णानीजी इस षड्यंत्र को सहन नहीं कर पाये। राजस्थान पुलिस का छिंदवाड़ा गुरुकुल की बच्चियों पर मानसिक दबाव, धाक-धमकी द्वारा जबरदस्ती मनचाहे बयान लेने जैसी हरकतों से तथा पूज्य बापूजी की गिरफ्तारी के लिए षड्यंत्रकारियों द्वारा रची गयी गहरी साजिश से उन्हें बहुत बड़ा सदमा लगा। उनकी धार्मिक भावनाएँ आहत होने से उन्होंने अन्न-जल का त्याग कर दिया था। अपने दिल की पीड़ा भोपाल कलेक्टर को ज्ञापन के रूप में दी व जब पीड़ा का कुछ निराकरण न दिखायी दिया तो हार्ट-अटैक से अपनी जान दे डाली। झूठी कल्पित कहानियाँ बनानेवालों ने दो दिन से अन्न-जल त्यागकर बैठे हुए इन सेवायोगी साधक के प्राण ले लिये। २९ अगस्त को प्रातः ३.२० बजे उन्होंने शरीर छोड़ दिया। कुप्रचार के पूर्व वे पूरी तरह स्वस्थ थे। देशभर के साधकों ने इसका शोक जताया है। उन्होंने गुहार लगायी है कि बिना तथ्यों की झूठी खबरें न फैलायी जायें ताकि हमें हमारे महत्त्वपूर्ण, राष्ट्रसेवी साधकों को इस प्रकार खोना न पड़े।

पूज्य बापूजी देव कृष्णानीजी के हादसे को सुनकर उनके अंतिम संस्कार के लिए बीच जन्माष्टमी कार्यक्रम में ही सूरत से भोपाल पहुँचे। उनको बेटियाँ ही थीं, अतः बापूजी, अन्य रिश्तेदार व साधकों ने कंधा दिया।

पूज्य बापूजी को गिरफ्तार करने की घिनौनी साजिश

राजस्थान पुलिस को मोहलत बढ़ाने के लिए खबर की गयी थी। कोई उत्तर न मिलने पर ३० तारीख को जेट एयरवेज की टिकट बापूजी ने करा ली थी। परंतु ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया (आयुर्वेद के अनुसार अनंत वात) की भयंकर पीड़ा के कारण टिकट कैंसल करानी पड़ी। यह पीड़ा प्रसूति व हार्ट-अटैक की पीड़ा से भी अधिक भयंकर होती है। इसमें थोड़ी-सी असावधानी से शरीर का अंत हो सकता है, व्यक्ति की मौत हो सकती है। इंटरनेट पर सबसे पीड़ादायक रोग के रूप में इसका वर्णन आता है। फिर शाम को भोपाल से वाया दिल्ली जोधपुर जाने हेतु भोपाल एयरपोर्ट पहुँचे परंतु मीडिया व लोगों की भीड़ के कारण बोर्डिंग काउंटर बंद हो गया। टिकटों के रूप में प्रूफ भी हमारे पास हैं।

परिश्रम, जागरण, तनाव होने पर भी बापूजी बाई रोड इंदौर के अपने आश्रम पहुँचे। किसी अनजान स्थान पर नहीं गये। इसके विपरीत कुछ-का-कुछ उछाला गया कि भाग गये आदि। मध्य प्रदेश की पुलिस ३१ तारीख को सुबह लगभग ६ बजे आश्रम पहुँच चुकी थी और पूरी कुटिया को सैकड़ों पुलिसवालों ने घेर लिया था। दोपहर तक भक्त भारी संख्या में इकट्ठे हो गये थे। ३१ तारीख रात को इंदौर आश्रम के व्यासपीठ से जाहिर सत्संग में

बापूजी ने १६७ देशों को इंटरनेट लाइव द्वारा संदेश देते हुए खुलेआम कहा : ''हम जोधपुर पुलिस का इंतजार कर रहे हैं व स्वागत करते हैं। किसी कारण से शरीर की अचानक पीड़ा से नहीं जा पाये। वह पीड़ा अभी तक यथावत् बनी हुई है।''

पूज्यश्री का रक्तचाप १६०/१२० था। हृदय में भारीपन व छाती में दर्द भी था। वैद्यों ने पुलिस से निवेदन किया कि हम डॉक्टर को बुलाना चाहते हैं। डॉक्टर आये।

जोधपुर की पुलिस आश्रम में पहुँच गयी । बापूजी ने उनसे कहा : ''आप निश्चिंत रहना । हम भाग नहीं जायेंगे, हम भगेडू नहीं हैं। हम वचन देते हैं कि आपको पूरा सहयोग करेंगे।''

पुलिस ने कहा : ''कल सुबह ७.५० की फ्लाइट से हम आपको दिल्ली ले जायेंगे। आगे कनेक्टिंग फ्लाइट से जोधपुर।'' बापूजी ने सहमति दी।

कलबल-छल से की गिरफ्तारी

रात्रि १०.३० बजे बापूजी अपने कमरे में विश्राम के लिए चले गये। ११ बजे के आसपास पुलिस ने आश्रम में सर्वत्र शांति से बैठकर जप-पाठ करनेवाले भक्तों को उठाना चालू किया। बड़ी बेरहमी से अपमानजनक वचन सुनाकर अपने डंडों से पीटते हुए पुलिस ने भक्तों को उठाकर आश्रम की सड़कें खाली कर दीं। भक्तों को एक जगह बैठाकर चारों तरफ से बैरियर लगाये गये। उस समय इंदौर आश्रम में ८०० से भी अधिक संख्या में पुलिस थी। रात के १२ बजे तक बहुत बड़ा कोलाहल मच गया था। १२ बजे पुलिस की गाड़ी कुटिया में आ गयी। पुलिस ने सेवकों से कहा : ''हम १०-१५ मिनट बापूजी से सवाल करना चाहते हैं। आप बाहर बुलाइये।''

सेवकों ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की : ''बहुत थके हुए हैं, विश्राम में हैं। आपको जो भी पूछना है, सुबह पूछ लीजिये।''

पुलिस का दबाव बढ़ता गया। जब वे ऊँची आवाज में चिल्लाने लगे तब गुरुदेव अपने कमरे से बाहर आ गये। पुलिस ने कहा : ''रात के १२ बज चुके हैं। ४ दिन के 'समन्स' का समय पूरा हो चुका है, हम आपको यहाँ से ले जायेंगे।''

सेवकों ने कहा : ''आपने ही कहा था कि सुबह की फ्लाइट से ले जायेंगे, रात को यहीं विश्राम कर लें। तो आप आधी रात को क्यों जबरदस्ती कर रहे हो ?''

पुलिस चिल्लाने लगी : ''हम क्या तुम्हारी बात मानने आये हैं ? समय पूरा हो चुका है, हम लेकर जायेंगे।''

गुरुदेव उठकर पुलिस की गाड़ी में बैठने लगे। सेवक से अपना आसन माँगा। पुलिस ने बदतमीजी से कहा : ''कोई आवश्यकता नहीं आसन-वासन की, बैठ जाओ।''

अंगद सेवक भागकर पानी की बोतल व बैग लेकर आया। पुलिस ने गाड़ी में नहीं रखने दिया। गुरुदेव के दोनों तरफ, आगे व पीछे पुलिस बैठ गयी। पुलिस की गाड़ी कुटिया के द्वार से बाहर निकल गयी। बाकी की पुलिस ने कुटिया के अंदर सेवकों पर लाठीचार्ज चालू कर दिया। भक्त गुरुदेव की गाड़ी की ओर दौड़ पड़े। लाठीचार्ज जारी रहा। गाड़ी आश्रम के प्रवेशद्वार से बाहर निकल गयी। पुलिस ने कहा था कि 'सुबह ले जायेंगे' पर रात को १२-२० बजे 'मार्शल लॉ' की रीति से एयरपोर्ट पर ले गये। रात को १ बजे से सुबह तक बापूजी को एयरपोर्ट पर बिठाकर रखा गया। सुबह जैसे ही फ्लाइट में चढ़े, मीडिया ने अंदर भी सताना चालू रखा।

दिल्ली से जोधपुर की फ्लाइट पकड़कर जोधपुर पहुँचे। उतरते ही कानूनी जाँच चालू हुई। इतना उन्हें कम लगा तो रात १२.३० तक जाँच जारी रखी। यह लगातार दूसरी रात थी कि बापूजी थोड़ी देर भी सो नहीं पाये। पूछताछ के दौरान बापूजी ने यौन-शोषण के बारे में कहा : ''हम ऐसा काम कर ही नहीं सकते।''

पूज्य बापूजी पुलिस की नजरकैद में थे। कैमरे लगे हुए थे। एक सेवक साथ में था। सेवक ने देखा कि सिर की दाहिनी तरफ काफी सूजन है। पूछने पर पता चला कि तीव्र दर्द भी है। रातभर के जागरण से 'ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया' की पीड़ा भयंकर रूप लेने लगी। जोधपुर की पुलिस कस्टडी में शिरोधारा का उपचार एकमात्र उपाय था। भयंकर हालत देखकर पुलिस को अपना मानसिक दबाव रोकना पड़ा और उन्होंने उपचार कराने की अनुमति दी। एमआरआई स्कैन में इस रोग के सभी कारणों को जाना नहीं जाता। वेबसाइट पर इसकी भयंकरता का वर्णन मिलता है। पिछले १३ वर्षों से बापूजी इस भयंकर पीड़ा से ग्रस्त हैं। इतने वर्षों में हुए रोगोपचार की १०० से अधिक रिपोर्टें नीता वैद्य के पास हैं। कहाँ गयी मानवता ? जैसा व्यवहार बापूजी के साथ हुआ, ऐसा किसीके साथ न करें।

"अभी भी आपने मुझे कहाँ पकड़ा है ?"

सेवक ने देखा कि संतश्री उसी छोटे-से कमरे में अपनी लाल टोपी व धोती पहनकर टहल रहे थे और गा रहे थे : **''मम दिल मस्त सदा तुम रहना... आन पड़े सो सहना। मम दिल...''** पुलिस को सत्संग के वचन सुना रहे थे, उनका नियम जो है प्रतिदिन सत्संग करने का !

पुलिस पूछताछ के दरम्यान भी वे पुलिस को बीच-बीच में ज्ञान की बात सुनाते थे। एक पुलिस ने उनसे पूछा : ''बापू ! आप तो कहते थे कि पुलिस मुझे पकड़ नहीं सकती।''

बापूजी ने कहा : ''वह तो है ही, अभी भी आपने मुझे कहाँ पकड़ा है ?''

"हिन्दू धर्म को कोई भी कदापि नहीं मिटा सकता।"

सेवक ने पूज्यश्री से कहा : ''गुरुदेव ! हमारा जो विश्वास है कि सत्य की जय होती है, उसे टूटने नहीं देना।''

बापूजी : ''वह तो है ही। इतिहास साक्षी है।''

सेवक : ''गुरुदेव ! हमसे यह सब सहन नहीं होता। भक्त अत्यंत व्यथित हैं, सड़क पर उतर आये हैं।''

पूज्यश्री : ''भगवन्नाम का जप करें।''

सेवक : ''गुरुदेव ! अगर कूटनीति ऐसे ही चलती रहेगी और संतशिरोमणि को ही जेल में डाला जायेगा तो सारा संत-समाज ही धीरे-धीरे नेस्तनाबूद किया जायेगा। हिन्दू धर्म की जड़ें उखाड़ दी जायेंगी।''

पूज्यश्री (आँखें बंद, चेहरा शांत) : ''हिन्दू धर्म को कोई भी कदापि नहीं मिटा सकता।''

पुलिस ने सेवकों को कमरे से बाहर निकाल दिया। गुरुदेव के श्रीचरणों में प्रणाम करके वे निकल गये।

रिमांड होम में सेवक देख रहे थे कि जो भी पुलिसवाला आता पूज्यश्री उसे उसके स्वास्थ्य के बारे में उपाय बताते थे। उनके सहज विनोदी स्वभाव के अनुसार चुटकियाँ भी लेते थे। सुबह-शाम खुली हवा में घूमने का नियम है, वह कमरे में ही घूमकर पूरा करते थे।

उसके बाद शाम ४-४.३० बजे न्यायालय में ले जाया गया। ५ ही मिनट में सुनवाई

हुई - 'जेल' । पूज्यश्री को जोधपुर के केन्द्रीय कारागृह में ले जाया गया ।

मच्छरों का बाहुल्य व रोग के उपचार के अभाव में इन संत ने कितने कष्ट सहे यह भगवान जानते हैं और वे ही जानते हैं । मीडिया द्वारा फैलाया गया कि बापूजी को जेल में कूलर, पलंग आदि सुविधाएँ दी जा रही हैं । जबकि ऐसा कुछ नहीं है । न कूलर, न तखत, न कोई सुविधा ! स्वयं जेल अधीक्षक द्वारा इसकी पुष्टि हो चुकी है ।

सनसनी फैलानेवाली खबरों ने 'पीड़िता-पीड़िता' कहकर लाखों महिलाओं को पीड़ित करने का काम किया है । साजिश के तहत बापूजी की गिरफ्तारी से व्यथित लाखों-लाखों माँ-बहनें व महिलाएँ उपवास रख रही हैं ।

दहेज व रेप आदि के झूठे केसों की बहुतायत से असंख्य नर-नारियाँ, कई बेगुनाह परिवार, निर्दोष आत्माएँ साजिशकर्ताओं के शिकार होकर कारावास में पीड़ाएँ सह रही हैं । ऐसे झूठे मुकदमे देश व मानवता का गला नहीं घोंटते क्या ?

एक अधिकारी ने बताया कि ''९८ प्रतिशत रेप के केस झूठे साबित हुए हैं । मेरे १२ साल के कार्यकाल में मात्र ३ केस ही सच साबित हुए हैं ।''

''मैं इस गुरुकुल को बदनाम करके बंद करवाऊँगी''

कुछ दिनों पहले लड़की अस्वस्थ थी । उसका इलाज भी हुआ । इसके सबूत भी हैं । फिर उसने मानसिक अस्वस्थता दिखायी । सहेलियों से मिली जानकारी के अनुसार वह बाथरूम बंद करके तथा देर रात को छत पर टहलते हुए घंटों फोन पर बात करती रहती थी ।

आरोप लगानेवाली लड़की के बारे में छिंदवाड़ा गुरुकुल की एक छात्रा ने कहा : ''**वह गुरुकुल में रहना ही नहीं चाहती थी । उसे फिल्में देखना, लड़कों के बारे में चर्चा करना, फास्टफूड - इनमें अधिक रुचि थी । इन कारणों से लड़की बिगड़ न जाय इस हेतु पिता ने जबरदस्ती उसे गुरुकुल में रखा था ।**

गुरुकुल का सात्त्विक भोजन व नियम-जप आदि करके वहाँ के संयत वातावरण में रहना उसके लिए कठिन था । वह छुप-छुप के फिल्में देखती थी । वह गुरुकुल से निकलना चाहती थी । कैसे निकला जाय इस पर सोचती रहती थी । आधी-आधी रात को गुरुकुल की छत पर घूमती रहती थी ।''

जाने से कुछ दिन पूर्व बोलती थी : ''**मुझे अपना नाम करना है । मैं इस गुरुकुल को बदनाम कर दूँगी । बदनामी होगी तो अपने-आप बंद हो जायेगा । फिर तो पिताजी को मुझे यहाँ से लेकर ही जाना पड़ेगा ।**''

गुरुकुल को बदनाम करने के लिए उसने बापूजी को बदनाम करने का तरीका अपनाया । और विश्वविख्यात संत को बदनाम करने का सबसे आसान तरीका था - 'चरित्रहनन' ।

आरोप लगानेवाली लड़की की एक सहेली ने बताया कि ''**मैंने उससे पूछा कि तूने बापूजी के ऊपर झूठा आरोप क्यों लगाया ? तो उसने बोला : मेरे से जैसा बुलवाते हैं, वैसा मैं बोलती हूँ ।**''

माँ-बाप के साथ लड़की शाहजहाँपुर पहुँची । कुछ दिन बाद उसके भाई को पुलिस के द्वारा छिंदवाड़ा गुरुकुल से वापस बुलवाया गया । जाते

समय लिखित तथा विडियो इंटरव्यू में उसने गुरुकुल के प्रति अपना सकारात्मक रवैया दिखाया । बाद में षड्यंत्रकारियों से मिलने पर उसने बयान दिया कि 'गुरुकुल में भोजन नहीं दिया जाता, भूखा रखते हैं, केवल मांस-मच्छी खिलाते हैं', जो कि सफेद झूठ है और सम्भव नहीं है । ये बिल्कुल झूठे आरोप लगवाये गये, जो वहाँ के मीडिया में आये । इस प्रकार के न जाने कैसे-कैसे झूठे आरोप लगवाये गये व लड़की के द्वारा भी बेबुनियाद आरोप लगवाये गये । षड्यंत्रकारियों ने भाई-बहन से ऐसा सफेद झूठ बुलवाया । ऐसे बयान से ही षड्यंत्रकारियों की साजिश की गंध प्रकट हो जाती है ।

मेडिकल रिपोर्ट पूर्णतः सामान्य

आरोप करनेवाली लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट में लिखा गया है कि उसके शरीर पर कहीं भी खरोंच, बाइट (दाँतों से काटने) के निशान नहीं हैं । उसके साथ कोई भी यौन-शोषण (सेक्शुअल एसॉल्ट) तथा शारीरिक शोषण (फिजिकल एसॉल्ट) नहीं हुआ है । मेडिकल रिपोर्ट पूर्णतः सामान्य होने के बावजूद भी रेप के लिए लगायी जानेवाली गैर-जमानती धारा ३७६ अभी भी लगी हुई है । लड़की ने भी अपने बयान में कहीं भी 'रेप हुआ' ऐसा नहीं कहा है ।

कैसी मनगढ़ंत कहानी !

लड़की कहती है : 'बापूजी ने मुझे कमरे में बुलाया, मेरी माँ कमरे के बाहर बैठी हुई थी । बापूजी ने दरवाजा बंद करके मेरे कपड़े उतारने चाहे तो मैं चिल्लाने लगी तो मेरा मुँह बंद कर दिया । डेढ़ घंटे तक मेरे शरीर पर हाथ घुमाते रहे । फिर मुझे कहा : 'माता-पिता को बताना नहीं । नहीं तो जान से मार डालूँगा ।'

डेढ़ घंटे बाद मैं कमरे से बाहर आयी तो घबरायी हुई थी । माँ के साथ कुटिया के कम्पाउंड के बाहर ही जो साधक का घर है, उसमें चली गयी । मैंने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया और सो गयी ।'

कैसी मनगढ़ंत बातें हैं ! जो कन्या बीमार है, इलाज हुआ, मानसिक विक्षिप्त है, उसे छिंदवाड़ा से शाहजहाँपुर व वहाँ से जोधपुर (२००० कि.मी. से अधिक दूर) माँ-बाप के साथ बुलाकर और माँ कमरे के बाहर बैठी हो तो कोई साधारण या नासमझ आदमी भी कन्या का मुँह दबाकर डेढ़ घंटे तक शरीर के ऊपरी हिस्से पर हाथ घुमाता रहे, कुचेष्टा करता रहे व पास में किसान का घर होने के अलावा माँ-बाप भी हों - ऐसा सम्भव नहीं है । माँ कुटिया के दरवाजे के बाहर बैठी है तो उसे लड़की के चिल्लाने की आवाज सुनायी क्यों नहीं दी ? डेढ़ घंटे तक जिसका यौन-शोषण हुआ हो, ऐसी कथित १६-१७ वर्ष उम्र की लड़की जब माँ के सामने आती है तब क्या माँ को उसकी हालत देखकर मन में आशंका नहीं होगी ? और शोषण डेढ़ घंटे तक हुआ, यह लड़की को ऐसी परिस्थिति में कैसे पता चला ? क्या वह घड़ी देखकर अंदर गयी थी और आने के बाद भी घड़ी देख ली थी ?

लड़की बयान में लिखवाती है कि 'मैं चुपचाप कमरे में जाकर माँ-बाप के साथ सो गयी ।' ऐसा होने पर कोई कैसे सो सकता है ? फिर सुबह किसान के बच्चों के साथ खेली व २०० रुपये भी दे गयी । कार से स्टेशन पहुँची । डेढ़ घंटे तक अगर उसका मुँह दबाया रहता, हाथ घूमता रहता, वह विरोध करती रहती तो क्या उसके शरीर पर कहीं भी कोई निशान नहीं होता ? डेढ़ घंटे दबाया हुआ मुँह देखकर उसकी माँ के मन में आशंका नहीं होती ?

कमरा बंद था । कुंडी लगायी थी । लाइट भी बंद थी । ऐसी स्थिति में डेढ़ घंटे तक लड़की अंदर रही तो वहीं बाहर बैठी माँ ने दरवाजा क्यों नहीं खटखटाया ? अथवा बाहर जो तथाकथित ३ लड़के खड़े कर दिये गये थे, उनसे क्यों नहीं पूछा ?

उस लड़की की मनगढ़ंत बातों के सिवाय पुलिस के पास घटना के बारे में क्या जानकारी है ? उसकी बातों की पुष्टि के लिए क्या प्रूफ हैं ? मेडिकल रिपोर्ट तो सामान्य ही है । घटना तो बताती है १५ अगस्त की और एफआईआर दर्ज हुई २० को । ऐसा क्यों ? लड़की उत्तर प्रदेश की, पढ़ रही थी छिंदवाड़ा (म.प्र.) में, तथाकथित घटना जोधपुर (राजस्थान) की बता रही है और फिर एफआईआर दिल्ली में रात को २-४५ बजे क्यों ? वह भी कमला मार्केट पुलिस थाना ही क्यों ? अगर वे उत्तर प्रदेश से ट्रेन, बस या हवाई जहाज से भी दिल्ली पहुँचते तो भी कमला मार्केट से पहले ३ मुख्य पुलिस थाने मेन रोड पर आते हैं । वहाँ क्यों नहीं की गयी एफआईआर ? उनकी हर चाल पर कई सवाल खड़े होते हैं ।

जो भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार, समाज की व्यापक सेवा, बालक, युवाओं व महिलाओं के उत्थान, रोगग्रस्तों के उपचार, गरीबों हेतु भंडारे, हर प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में राहतकार्य आदि में ५० वर्षों से लगे हुए हैं, ऐसे एक अत्यंत लोकप्रिय महान संत को, एक कथित १६-१७ वर्ष की लड़की की आधारहीन, एक भी पुख्ता सबूत से रहित बातों के आधार पर क्या पुलिस जेल भेज सकती है ? तो इन सबके पीछे क्या राजनीति है ? हिन्दू धर्म की जड़ें काटना ? लोगों की धर्म से श्रद्धा हटाकर उन्हें धर्मपरिवर्तन के लिए प्रेरित करना ? भारत देश भारत तभी तक है, जब तक हिन्दू धर्म है । क्या वे धर्म को मिटाकर भारत देश को ही मिटाना चाहते हैं ? कई प्रश्न उठते हैं । प्रबुद्ध समाज को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए । बेबुनियादी बातें फैलाकर टीआरपी बढ़ानेवाले मीडिया पर अंकुश लगानेवाले ठोस कानून भारतीय संविधान में होने चाहिए । अन्यथा समाज दिग्भ्रमित हो जायेगा, धर्म और संतों पर से विश्वास खो बैठेगा । और ये केवल हिन्दू संतों पर ही आरोप क्यों लगते हैं ? अपनी संस्कृति और धर्म से आस्था हटी तो सर्वनाश !

यतो धर्मः ततो जयः । यतो धर्मः ततो अभ्युदयः ।

जब संत ही नहीं रहेंगे तो जीवन ही दिशाहीन हो जायेगा ।

संत न होते जगत में, तो जल मरता संसार ।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष अपार कष्ट, निंदा, अपमान सहते हुए भी लोक-कल्याण के कार्य में लगे ही रहते हैं । वह तो उनका स्वभाव ही होता है ।

तरुवर सरोवर संतजन चौथा बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे चारों धरिया देह ॥

बापूजी के साधकों के ऊपर भी हुआ घोर अत्याचार

देश-विदेश के साधकों में इस षड्यंत्र के खिलाफ घोर रोष फैल गया है । देशभर में शांतिपूर्वक विरोध करते हुए रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन चालू हो गये हैं ।

पूज्य बापूजी के ३ साधकों के ऊपर भी झूठा आरोप लगाया गया । उनमें से एक साधक शिवा के साथ पुलिस ने पूछताछ के नाम पर आतंकवादी की तरह व्यवहार किया । आरोप लगानेवाली लड़की ने कहा कि १५ अगस्त की रात को उन सबको शिवाभाई बुला के ले गये थे । जबकि शिवाभाई की टिकट व मोबाइल लोकेशन से पता चलता है कि वे शाम को ही दिल्ली निकल गये थे । शिवाभाई से पुलिस रिमांड के बल पर कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवाये गये । ऐसा करने के लिए पुलिस पर कितना प्रभाव-दबाव

रहा होगा ! शिवाभाई के साथ बेरहमी से मारपीट की गयी, प्रलोभन दिये गये, कान का पर्दा भी खराब कर दिया गया। बापूजी के खिलाफ बयान दिलाने के लिए क्या यह साजिशकर्ताओं का पुलिस पर दबाव नहीं है ? हाथ की कोहनियों व घुटनों पर जूते पहनकर आघात करते हैं। कहते हैं कि 'यह सब मेडिकल जाँच में नहीं आयेगा।' ऐसा कहकर शारीरिक के साथ मानसिक पीड़ा भी देते हैं। भगवान ऐसी पीड़ा किसी निर्दोष को न दें, जो शिवाभाई को दी गयी। पूज्य बापूजी पर भी ऐसा दबाव बनाया गया। कोई भी कागज पढ़कर सुनाये बगैर उन पर हस्ताक्षर करवाये गये।

जब 'सहारा समय' व 'पी-७' न्यूज चैनलवालों ने पूछा तो शिवाभाई ने सारा हाल कह डाला : ''बापूजी कभी किसी लड़की से एकांत में नहीं मिलते हैं। मैं ८ साल से गुरुदेव के साथ रहता हूँ। ऐसा कुछ हुआ नहीं है और कहीं-न-कहीं ये षड्यंत्रकारियों की सेटिंग है। मेरे पास ऐसा कोई सबूत नहीं है, कोई सीडी नहीं है, जैसा मीडिया द्वारा फैलाया जा रहा है। मेरे साथ पुलिस द्वारा जबरदस्ती की जा रही थी। पुलिस ने मेरी चोटी उखाड़ दी, मेरे को बहुत मारा-धमकाया कि जो हम बोलें वह तुझे बोलना है। मेरे पास पेपर भी लाये कि तुम्हारे पास से हमें सीडी मिली है - ऐसा हस्ताक्षर करके स्वीकार करो। जबकि मेरे पास कोई सीडी नहीं है।'' शिवा ने अदालत में इस बात की शिकायत भी की।

इस बात की पुष्टि तथा मीडिया में चल रही झूठी बातों की पोल खोलते हुए डीसीपी अजय पाल लाम्बा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा : ''हमें कहीं से कोई भी सीडी, कोई मूवी या विडियो क्लिप बरामद नहीं हुई है। ये तथ्यहीन बातें हैं।''

किसी भी व्यक्ति को पुलिस हिरासत में लेने के बाद २४ घंटों के अंदर मजिस्ट्रेट के सामने पेश करना कानूनन अनिवार्य है। फिर भी गैर- कानूनी ढंग से जोधपुर पुलिस ने ३ दिन तक शिवाभाई की रिमांड लेने के बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया।

छिंदवाड़ा गुरुकुल की वार्डन शिल्पी का पिछले ६ माह में पूज्य बापूजी से मौखिक या फोन से कोई सम्पर्क नहीं रहा है। जोधपुर पुलिस ने छिंदवाड़ा जाकर उस पर भी दबाव डाला। साथ ही आरोप लगानेवाली लड़की की सहेलियों को भी बहलाया व धमकाया तथा उन्हें भी उसी तरह का बयान देने के लिए बाध्य किया। जो पूछताछ कुछ घंटों में पूरी हो सकती थी, उसे ३ दिन तक जारी रख के कुत्सित प्रयास किये गये। इन सबसे परेशान होकर छात्राओं ने 'राजस्थान पुलिस ऐसा दबाव क्यों बनाती है ?' ऐसा सवाल उठाया व उनके विरुद्ध नारे लगाये, तब कहीं राजस्थान पुलिस छिंदवाड़ा से वापस लौटी।

क्या यह साजिशकर्ताओं का दबाव, प्रलोभन या जो भी कुछ कहो, स्पष्ट नहीं दिखता ? इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने का कितना घोर षड्यंत्र हो रहा है। नहीं तो देश की सेवा करनेवाले ऐसे महापुरुष तथा उनके साधकों के साथ आतंकवादी की तरह व्यवहार नहीं किया जाता। यह घोर निंदनीय है। एक लड़की की निराधार बातों के आधार पर एक ऐसे संत, जिनकी वाणी को दुनिया के करोड़ों लोग श्रद्धापूर्वक सुनते हैं, जिन महापुरुष के साथ करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाएँ जुड़ी हैं, उनके साथ ऐसा अत्याचार यह न्याय-प्रणाली और कानून-व्यवस्था का दुरुपयोग नहीं तो और क्या है ?

****

तत्त्व दर्शन

ध्रुव व भगवान विष्णु की रहस्यमय बातें

(गतांक से आगे)

पराशरजी मैत्रेय से बोले : ध्रुव को जब भगवान विष्णु ने अपने दर्शनों से कृतार्थ कर उसकी इच्छानुसार अटल पदवी का वरदान दिया तो ध्रुव को पहले तो अटल पदवी का अहंकार हुआ परंतु भगवद्दर्शन के प्रताप से शीघ्र ही निरभिमानी होकर वह भगवान से प्रश्न करने लगा : ''हे स्वामी ! मैं कौन हूँ अटल पदवी लेनेवाला ? आप कौन हैं अटल पदवी देनेवाले ? और अटल पदवी व जगत का वास्तविक स्वरूप क्या है ?''

इस पर भगवान विष्णु ने कहा : ''हे ध्रुव ! तुझको इन बातों से क्या प्रयोजन है ? इन प्रश्नों का उत्तर देने से न 'तू' रहता है, न 'मैं' रहता हूँ, न यह जगत रहता है, न अटल पदवी रहती है। इससे यह बात मत पूछ।''

तब ध्रुव ने कहा : ''जो हो सो हो, पर प्रश्न का उत्तर मुझको कृपया यथार्थ कहिये।''

''हे ध्रुव ! वास्तव में न तू, न मैं, न यह जगत है। यह सब भ्रममात्र है, सत्य नहीं है, जैसे रस्सी में (भ्रम से भासनेवाले) सर्प आदि विलासमात्र हैं। सत्य तो एक मन-वाणी से परे तथा तुम्हारा-हमारा और सर्व जगत का जो साक्षीस्वरूप है, वही है।''

यह सुनकर ध्रुव ने कहा : ''फिर तो मैंने व्यर्थ ही भ्रम से यह निश्चय किया है कि आपने मुझको अटल पदवी दी है। जैसे कोई स्वप्न देख रहा हो और उसमें स्वप्नद्रष्टा खुद के द्वारा कल्पित एक स्वप्न-पुरुष को अटल पदवी दे दे और स्वप्न-पुरुष उसे ले तो वह भ्रममात्र है।''

''हे ध्रुव ! अटल पदवी को मत त्याग क्योंकि ज्ञानी को जो पदार्थ प्रारब्ध से प्राप्त होते हैं, उन्हींसे वे प्रसन्न रहते हैं।''

फिर ध्रुव द्वारा भगवान से अपने स्वरूप के बारे में पूछा जाने पर विष्णुजी बोले : ''जैसे साँप रस्सी से अथवा गहना सोने से पूछे कि मेरा स्वरूप क्या है तो बड़ा आश्चर्य है। यदि स्वप्न-नर स्वप्नद्रष्टा से पूछे कि 'हे स्वप्नद्रष्टा ! मेरा स्वरूप क्या है ?' और यदि स्वप्न के नर ऊँची भुजा करके पुकारें कि 'हम स्वप्नद्रष्टारूप नहीं हैं, स्वप्नद्रष्टा से भिन्न हमारी स्वतंत्र सत्ता है।' तो उनकी बात सुनकर विद्वान लोग हँसेंगे कि 'ये वृथा प्रलाप करते हैं।' उसी प्रकार हे ध्रुव ! तू मुझसे पूछता है कि 'मैं कौन हूँ ?' - यह भी हास्य का विषय है। अहंभाव-त्वंभाव का मुझमें मार्ग नहीं, मैं केवल स्वयंप्रकाशस्वरूप अद्वितीय हूँ।''

''हे प्रभु ! तब तो मैंने व्यर्थ देह को कष्ट दिया है। जब आप अद्वितीय हो तो 'मैं' नहीं हूँ। जब 'मैं' ही नहीं तब अटल पदवी से, आपसे, भजन से तथा इस लोक-परलोक से क्या प्रयोजन है ?''

''हे ध्रुव ! बालकों की नाईं विलाप मत कर।

अविद्या के कारण जो काम हुआ सो हुआ, उसका क्या पश्चात्ताप करना ! जो तूने किया है वह अपनी वासना से ही किया है, मैंने तुझे कुछ दिया नहीं।''

''आश्चर्य है, मुझ मूर्ख, ज्ञाननेत्रों से अंधे को आपने अंधे कूप में डाला। क्योंकि आप चैतन्य से पृथक् यह अटल पदवी सहित सम्पूर्ण जगत अंधकूपरूप है व मिथ्या है। अतः हे प्रभु ! अब वही उपाय कहो, जिससे इस अंधकूप से निकल सकूँ।''

''निकलने का उपाय यही है कि अपनेसहित तथा अटल पदवी सहित सर्व जगत को सर्वव्यापक गोविंद जान और पश्चात्ताप का त्याग कर। **हे ध्रुव ! जब तक निद्रा दूर नहीं होती, तब तक स्वप्न-नर को स्वप्न के स्थान में कहीं-न-कहीं यात्रा करनी ही होगी। और स्वप्न के स्थानों में बुद्धिमानों को ऊँच-नीच भाव है नहीं। हे ध्रुव ! 'सर्व शरीरों सहित स्वप्न-जगत मिथ्या है और स्वप्नद्रष्टा ही सत्य है।' - यह जानना ही संसाररूपी अंधकूप से निकलना है।''**

''कुछ चिंता नहीं। जब सर्व गोविंद है तो पश्चात्ताप भी गोविंद है और न पश्चात्ताप भी गोविंद है।''

भगवान विष्णु ने कहा : ''अब हम जाते हैं। तुम्हारा कल्याण हो और तुमको संत मिलेंगे।''

जीवन संजीवनी

- श्री परमहंस अवतारजी महाराज

✻ पूरे सद्गुरु का संकल्प अखंड ब्रह्मांडों तक पहुँचता है। वे अपने सच्चे सेवक की लोक-परलोक में सहायता करते हैं।

✻ तुम अपना मूल्यांकन करो कि तुममें गुरुवाक्यों, गुरु-प्रसाद का प्रेम बढ़ रहा है या मायावी मोह ? सद्गुरु का प्रेम तुम्हें ईश्वर से एकाकार करा देगा और मायावी मोह चौरासी के चक्कर में डालेगा।

✻ सच्चे सेवक हर पल सद्गुरु को याद करते हैं इसलिए अंत समय यमदूत उनके निकट नहीं आ सकते।

✻ जो लोग गुरुमति और भगवन्नाम-अभ्यास को छोड़कर मन के विचारानुसार कर्म करते हैं, वे कर्मफल से नहीं बच सकते। शब्दाभ्यास (ॐकार/भगवन्नाम उच्चारण एवं जप-अभ्यास) के बिना कर्मों की जड़ नहीं काटी जा सकती।

संत पर आरोप लगा के, उनके इंटरव्यूज को तोड़-मरोड़कर पेश करके या उनके नाम पर झूठे वक्तव्य छाप के श्रद्धालुओं के हृदय को पीड़ा पहुँचानेवाले ऐसे लोगों को कुछ कमाई हो भी जाय तो भी वह क्या परिणाम लाती है, इतिहास उसका गवाह है।

किसीने ठीक ही कहा है :

अगर आराम चाहे तू, दे आराम खलकत को।
सताकर गैर लोगों को, मिलेगा कब अमन तुझको॥

दूसरी ओर जो समाज और संत के बीच सेतु बनकर धर्म, संस्कृति एवं देश की उन्नति का प्रयास करते हैं, वे महापुरुषों के साथ अपना भी नाम रोशन कर लेते हैं।

स्वामी विवेकानंदजी को आज सारी दुनिया जानती है परंतु लोगों को गुमराह करने का भयंकर पाप लेकर अपने कुल-खानदान को भी कलंकित करनेवाले निंदक नष्ट-भ्रष्ट हो गये।

चेला नहीं, सीधे गुरु बनाया

- पूज्य बापूजी

राजस्थान में एक हो गये केताजी महाराज । उनके पास एक लड़का आया दीक्षा लेने के लिए । वे बोले : ''अरे, क्या दीक्षा दें, जरा रुको, देखेंगे ।'' लड़का भी पक्का था । देखते-देखते, गुरु महाराज की गायें चराते-चराते एक साल हो गया । उसने गुरुजी से फिर प्रार्थना की : ''महाराज ! दीक्षा दीजिये ।''

महाराज बोले : ''देखेंगे ।''

दो-चार गायों में से कई हो गयीं । जंगल में गायें चराने जाय और कभी-कभी गुरुजी के पास आये, ऐसा करते-करते गुरुजी ने उसे अपने कमरे तक की सेवा दी । केताजी महाराज आज दीक्षा देंगे, दो महीने के बाद देंगे - ऐसा करते-करते दस साल बीत गये । गुरुजी भी पूरे फक्कड़ थे और लड़का भी फक्कड़ ! लड़का जाय नहीं और गुरुजी दीक्षा देवें नहीं ।

एक दिन गुरुजी ने सोचा कि अब जरा देखें । केताजी महाराज ने कहा : ''देख, जरा मटका उठा और तालाब से पानी भर ला ।'' पुराने जमाने की बात है । वह मटका भर के आया । केताजी महाराज ने पूछा : ''कौन-से तालाब का पानी भर के लाया ?''

बोला : ''नजदीकवाले तालाब का ।''

''छिः ! उसमें तो भैंसें भी बैठती हैं ।''

मारी छड़ी, मटका फोड़ दिया । सुबह-सुबह पौष मास की ठंड, सूरज उगा नहीं । लड़का तो ऐसे ही ठिठुर रहा था और मटके पर मारी छड़ी तो पूरा मटका उस पर ढुल गया । वह पूरा भीग गया ।

''बेवकूफ कहीं का ! उस दूसरे तालाब का पानी ले आ ।''

वह गया, दूसरे तालाब का पानी ले आया । ''अरे ! दूसरे तालाब का लाया लेकिन तालाब के बीच से लाया कि किनारे-किनारे से ?''

अब केताजी महाराज यह समझते थे कि तालाब के बीच जायेगा तो डूब मरेगा, किनारे से ही भरना होता है ।

''गुरुजी ! मैं तो किनारे-किनारे से ले आया ।''

''धत् तेरे की !''

मार दी छड़ी । वह छोरा फिर भीग गया । ऐसे ही कोई-न-कोई बहाना करके ७ बार मटका फोड़ दिया । ठंड में वह लड़का काँपता रहा लेकिन गुरु का द्वार छोड़े नहीं ।

''अब जा, चला जा तू अपने घर ! जा के काम-धंधा करो । बाबाओं के पीछे क्या लगे हो ? लेकिन जाते-जाते एक मटका पानी तो दे जा गुरु को ।''

एक मटका पकड़ा दिया । वह तालाब के किनारे गया, मटका रखकर बैठ गया । बेचारा ठंड से काँप रहा था । सोचा कि 'अब की बार जाऊँगा तो ठंड से मर ही जाऊँगा ।' मन ने कहा : 'अरे, भाग चल यहाँ से ! गुरुजी आठवें मटके को भी मारेंगे डंडा । शरीर में तो अब ताकत भी नहीं रही । मैं भाग जाऊँ, क्या करूँ ?'

धीरे-से उठा और गुरु के इलाके को प्रणाम करके चलने लगा तो मटके से आवाज आयी कि ''ऐ ! कहाँ जाता है ?''

लड़के ने सोचा, 'इस मटके से गुरुदेव की आवाज कैसे आ रही है ! नहीं, यह मेरे मन का भ्रम होगा । गुरुदेव तो आश्रम में केता-कुटीर में हैं ।' थोड़ा

चला, फिर आवाज आयी : ''अरे, सुनता नहीं !''

फिर गुरु महाराज का सूक्ष्म शरीर कहो, योगशक्ति कहो, ईश्वर की लीला कहो, वह मटका अपनी गाथा सुनाने लगा कि ''मैं कुदाली और फावड़ों से मिट्टी के ढेर में से कटा, फिर कुम्हार ने मुझमें पानी डाला, मुझे रौंदा । फिर चाक पर घुमाया और आगे-पीछे हाथ रख के मार-मार के मुझको घड़ा बनाया । फिर धूप में सुखाया । उसके बाद मुझे नेवे में डाल दिया और पकाया । इतना-इतना सहा फिर भी मैं डटा रहा तो आज तुम्हारे जैसे भक्त के सिर पर बैठने का अवसर आया और तू मुझे छोड़कर जा रहा है !''

लड़का सोचने लगा, 'यह क्या है ?'

अरे, तेरी पुण्याई है इसीलिए घड़े के रूप से भगवान तुझको प्रेरणा दे रहा है । गुरु महाराज की सत्ता कहो, गुरु महाराज का चैतन्य कहो तुझको प्रेरणा दे रहा है ।

फिर आवाज आयी : ''चल, भर पानी ! कायर क्यों बनता है ?''

उसने मटका उठाया, 'जय गुरु महाराज !' करके भरा और गुरु महाराज के पास पहुँचा ।

केताजी बोले : ''क्यों रे ! लाया पानी ?''

''हाँ गुरुजी ! लाया हूँ ।''

''तू घर भाग रहा था क्या ?''

''हाँ गुरुजी !''

''फिर क्या हुआ ?''

''इस मटके से आवाज आयी ।''

केताजी बोले : ''भगवान कैसे समर्थ हैं ! जड़ में से भी ध्वनि कर सकते हैं, चेतन में से भी कर सकते हैं । कैसे रक्षक, पोषक हैं ! कैसे सर्वनियंता हैं !

तेरे को चेला क्या बनाऊँ, तू कौन है जरा सोच । चेला क्यों बनना चाहता है ? कौन गुरु कौन चेला, चलाचली का मेला ।''

लड़का केताजी को देख रहा है, केताजी लड़के को देख रहे हैं । गुरु ने अपनी ब्राह्मी स्थिति का स्फुरण कर दिया । उसके ज्ञान-नेत्र खुल गये । लड़का सीधा गुरु बन गया, चेला बना ही नहीं !

केताजी महाराज ने उसको चेला नहीं बनाया, सीधे गुरु ही बना दिया । मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ । मेरे लिए भी गुरुजी ने कोई चेला-बेला का विधि-विधान नहीं किया । बस आज्ञा कर दी । हम रहे

पुण्यदायी तिथियाँ

२९ सितम्बर : रविपुष्यामृत योग (सुबह ८-१३ से ३० सितम्बर सूर्योदय तक)

३० सितम्बर : इंदिरा एकादशी (पापनाशक तथा पितरों की सद्गति करानेवाला व्रत)

५ से १३ अक्टूबर : शारदीय नवरात्र

६ अक्टूबर : पूज्य बापूजी का ४९वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

८ अक्टूबर : मंगलवारी-अंगारकी चतुर्थी (सूर्योदय से रात्रि १२-०५ तक)

१३ अक्टूबर : विजयादशमी (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक), विजय मुहूर्त (दोपहर २-२२ से ३-०९ तक) (संकल्प, शुभारम्भ, नूतन कार्य, सीमोल्लंघन के लिए), दशहरा

१५ अक्टूबर : पापांकुशा-पाशांकुशा एकादशी (यम-यातना से मुक्त करनेवाला व्रत)

१७ अक्टूबर : संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ८-०१ से शाम ४-०१ तक)

१८ अक्टूबर : शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नानारम्भ, मांद्य चन्द्रग्रहण (१९ अक्टू. प्रातः ३-१८ से ७-२१)

वह अधीनता जिससे परम स्वाधीनता

- पूज्य बापूजी

पंचभौतिक शरीर माया का है, मन, बुद्धि, अहंकार भी माया हैं, यह अष्टधा प्रकृति है। भगवान बोलते हैं कि 'यह अष्टधा प्रकृति मैं नहीं हूँ, तो तुम भी यह नहीं हो।' भगवान के वचन मान लो।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥
(गीता : ७.४)

ये प्रकृति, पंचभौतिक शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार मेरे से भिन्न हैं, तो आपसे भी भिन्न हैं। शरीर, मन, बुद्धि बदलते हैं, आप नहीं बदलते हैं, आप उनको जानते हैं। 'मैं दुःखी हूँ, मैं सुखी हूँ' यह अहंकार भी बदलता है। 'मैं चिंतित हूँ, मैं गरीब हूँ, मैं अमीर हूँ' यह अहंकार भी बदलता है। आठों बदलते हैं आपके भी और भगवान के भी। तो जो भगवान का आत्मा है वही तुम्हारा आत्मा है। और शरीर भगवान का भी नहीं रहा तो तुम्हारा कब तक रहेगा ?

तुम शरीर नहीं हो, तुम अमर आत्मा हो। जैसा भगवान अपने को जानते हैं, ऐसा आप भी अपने को जानो। गुरु अपने को जैसा जानते हैं, ऐसा अपने को जानो। मरने से डरो नहीं, किसीको डराओ नहीं। बेवकूफ बनो नहीं, दूसरे को बेवकूफ बनाओ नहीं। दुःखी होओ नहीं और दूसरों के लिए दुःख बनाओ नहीं।

अपने को दुःखी करने का क्या मतलब है ? मूर्खता के सिवाय दुःख हो ही नहीं सकता। बिना बेवकूफी के गलत निर्णय हो ही नहीं सकते। जब भी गलत निर्णय होते हैं तो उनके मूल में बेवकूफी होती है। इससे दुःख होता है। दुःखी होकर निर्णय नहीं करना, द्वेष में निर्णय नहीं करना, चिंता में आकर निर्णय नहीं करना, भय में आकर निर्णय नहीं करना।

सुबह नहा-धोकर, सूर्य को अर्घ्य दे के, ध्यान करके, गुरु से तादात्म्य करके फिर निर्णय करो तो दुर्गति नहीं होती। नहीं तो फिर-फिर से पान-मसाला, दुर्गति है ! फिर-फिर से सिगरेट, फिर-फिर से फिल्म, नहीं चाहते हुए भी वही करते हैं। यह क्या है ? ये आदतें हम पर हुक्म चलाती हैं। तुम आदतों के हुक्म में न चलो, शास्त्रों के हुक्म में चलो, गुरु के हुक्म में चलो, ईश्वर के हुक्म में चलो।

ईश्वर, शास्त्र और गुरु के अधीन होते हैं, वह अधीनता नहीं है, परम स्वाधीनता है क्योंकि अपनी स्वीकारी हुई है। सत्य की अधीनता, अधीनता नहीं रहती। शास्त्र की अधीनता, अधीनता नहीं रहती। भगवान राम शास्त्र के अधीन रहते थे, भगवान कृष्ण शास्त्र के अनुरूप चलते थे, मेरे गुरुजी चलते थे। तो शास्त्र की, भगवान की और गुरु की आज्ञा में चलना यह अधीनता नहीं है, वासनाओं की अधीनता ही अधीनता है।

जो शास्त्र, गुरु और भगवान की आज्ञा को ठुकरा देते हैं वे फिर वासनाओं की आज्ञा में चलते हैं, बेवकूफी की आज्ञा में चलते हैं, गलत निर्णयों की आज्ञा में चलते हैं और उनकी मति मारी जाती है। जो मनमुख होते हैं वे आखिर केंचुएँ तक की नीच योनियों में चले जाते हैं, पतंगे तक की नीच योनियों में चले जाते हैं। परंतु जो एक ईश्वर की शरण लेते हैं... ईश्वर

जब आशारूपी विष की बेल मूलसहित नष्ट हो जाती है, तब जन्म-मरण आदि दुःख नष्ट हो जाते हैं और फिर नहीं उपजते ।

कह दो तो शास्त्र और गुरु आ गये । गुरु कह दो तो ईश्वर और शास्त्र आ गये । **दिखते तीन हैं, हैं एक । 'ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदे विभागिनो ।'** आकृति-भेद से अलग हैं बाकी एक ही हैं । सत्शास्त्र कह दो तो ईश्वर आ गये उसमें । ईश्वर के बिना सत्शास्त्र हो सकता है क्या ? गुरु के बिना सत्शास्त्र होता है क्या ? गुरु कह दो तो सत्शास्त्र और ईश्वर आ गये । तो जो ईश्वर, गुरु, शास्त्र की शरण लेते हैं, वे दुःख, शोक, भय, चिंताओं के सिर पर पैर रखकर आत्मा-परमात्मा का अनुभव कर लेते हैं ।

पक्का कर लो कि 'अब हम ईश्वरमय जीवन जियेंगे, गुरु की आज्ञा के अनुरूप चलेंगे ।' गुरु की आज्ञा, ईश्वर की आज्ञा, शास्त्र की आज्ञा दिखती तो शुरुआत में अधीनता जैसी है लेकिन तमाम अधीनताओं से पार कर देती है !

भगवान श्रीकृष्ण के ६४ दिव्य गुण

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

भगवान का ८ **वाँ** गुण है **'सत्यवाक्यः'**, भगवान सत्यवादी हैं । भले हमें समझ में न आये लेकिन भगवान जो बोलते हैं, सत्य बोलते हैं । **९वाँ** गुण है **'प्रियंवदः'**, भगवान अपराधी से भी मधुर वचन बोलते हैं । **१०वाँ** गुण है **'वावदूकः'**, भगवान वक्तृत्व-कला में बड़े निपुण हैं । **११वाँ** है **'सुपाण्डित्यः'**, परम पंडित हैं भगवान । १४ विद्याओं के निधान व नीति-विचक्षण हैं । पंडितों के भी प्रेरक हैं, पंडितों को भी राह दिखानेवाले हैं । **१२वाँ** दिव्य गुण है **'बुद्धिमान्'**, भगवान बुद्धिमानों में शिरोमणि हैं । **१३वाँ** है **'प्रतिभान्वितः'**, वे प्रतिभाशाली हैं । **१४वाँ** गुण है **'विदग्धः'** अर्थात् कला-पारंगत । चाहे नृत्यकला हो, वाद्यकला हो, चाहे संगीतकला, युद्धकला, साधनकला या साध्यकला हो, वे सभीमें पारंगत हैं । **१५वाँ** गुण है **'चतुरः'**, भगवान चतुर हैं । जो आजकल के चतुर हैं, वैसी चतुराई नहीं । लोग निर्दुःख कैसे हों, इसमें भगवान चतुर हैं । 'लोग समतावान कैसे हों ? आत्मवान कैसे हों और मेरे स्वभाव को पाकर मुझमय कैसे हों ?' - ऐसी चतुराई भगवान में है । दूसरे तो चतुराई से खुद भी ठगे जायेंगे, लोगों को भी चीज-वस्तुओं से ठगेंगे । ऐसी तुच्छ चतुराई को संसारी लोग चतुराई मानते हैं, भगवान की चतुराई तो भगवन्मय है ।

१६वाँ गुण है **'दक्षः'**, भगवान दक्ष हैं, फिसलते नहीं । पुत्रों-पौत्रों को देखकर उनका पक्ष नहीं लेते । उनकी गलती है तो उनको भी दंडित करने में सहमत रहते हैं । ऋषियों ने उनके पुत्र-पौत्रों को शाप दिया कि ''तुम लोग यह गर्भवती गोपी लेकर आये हो लेकिन वास्तव में यह गोप है । इसके पेट पर जो तुमने मूसल बाँध रखा है, उसीसे तुम्हारा विनाश होगा ।'' कृष्ण ने सुना तो कहा : ''ऋषियों ने जो कहा, ठीक है । जो जैसा कर्म करता है, उसको वैसा फल भुगतने दो ।'' भगवान तटस्थ हैं, दक्ष हैं । चाहते तो शाप अन्यथा कर सकते थे । नहीं, दक्ष हैं । (क्रमशः)

अभी न किया तो कब करोगे ?

- पूज्य बापूजी

तुम जितनी देर शांत बैठते हो, निःसंकल्प बैठते हो उतनी तुम्हारी आत्मिक ऊर्जा, आत्मिक आभा, परमात्मिक शक्ति संचित होती है, तुम्हारा सामर्थ्य बढ़ता है।

एक संत से किसीने कहा : ''हम तो गृहस्थी हैं, संसारी हैं । हम तो एकांत में नहीं रह सकते, शक्तिसम्पन्न नहीं हो सकते।''

संत ने कहा : ''आप एक लोटे दूध को सरोवर में अथवा पानी के बड़े बर्तन में डाल दो तो आपका दूध व्यर्थ हो जायेगा लेकिन उस दूध में थोड़ा-सा दही डालकर उसे जमाओ, थोड़ा एकांत दो, बाद में मथो और पानी से भरे हुए घड़े या सरोवर में वह मक्खन डालो तो तैरेगा। ऐसे ही थोड़े समय भी तुम साधन-भजन करके अपने आनंदस्वरूप आत्मा का सुख लो तो फिर संसार के घड़े में व्यवहार करोगे तो भी नाचते-खेलते आनंद से सफल हो जाओगे, नहीं तो संसार आपको डुबा देगा । चिंता व विकारों में, राग-द्वेष में, भय और रोग में डुबा देगा और अंत में जन्म-मरण के चक्कर में भी डुबा देगा।''

'क्या करें ? हम तो संसारी हैं'- ऐसा करके अपना आयुष्य नष्ट नहीं करना । **तुम सचमुच परिश्रम से कमाते हो और बहुत मितव्ययिता से जीते हो तो तुम्हारा अधिकार है परम सुख पाने का।** मनुष्य चोले से श्रेष्ठतर कुछ भी नहीं है । ऐसा मनुष्य-जीवन पाकर आपने अगर ऊँचाइयों को नहीं छुआ तो फिर कब छुओगे ? जो भूतकाल में हो गया सो हो गया । अभी से तुम शक्ति का संचय करो, आत्मानंद में वृद्धि करो, बढ़ाओ।

ढूँढ़ो तो जानें

आश्रम से प्रकाशित 'योगासन' पुस्तक से ५ आसनों के चित्र व उनके सामने उनका एक-एक लाभ दिया गया है । वर्ग-पहेली में से उन आसनों के नाम खोजिये । इन आसनों का रोज नियमित रूप से ३ से ५ मिनिट अभ्यास करना चाहिए।

(१) उत्साह में वृद्धि तथा बुद्धि का अलौकिक विकास होता है।

(२) हृदय व श्वास रोग नहीं होते, स्वप्नदोष दूर होता है।

(३) जठराग्निवर्धक, थायराइड में लाभदायी, नेत्र और मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाता है।

(४) सिरदर्द व यकृत (लीवर) ठीक होता है, वृद्धावस्था के लक्षण जल्दी नहीं आते।

(५) पेट की वायु व कब्जियत दूर होती है।

म	मी	ष्ट	मा	न	ज	दः	दि	ल	अ	र्थी	ति
द	श्री	उ	न	प	न	डी	पः	स	श्री	तु	घ
र	श	दा	श्री	स	र	सं	न	स	रा	नु	ध
गी	ड़	शः	द्मा	र्वां	ङ्का	कु	श्री	स	श्री	श	उ
अ	क्ष	प	रा	गा	सः	सि	म	वि	गा	णे	इ
रः	हा	त	व	स	ध	ली	तां	दी	भा	जं	चे
र	ह	ध	श्री	न	शः	न	स	ड़ा	ता	व	भु
ती	क	ला	रु	नि	मु	श्री	डा	क	र्थ	गु	नः
न	श्री	ज	स	भ	वा	क्ता	मी	न	श्री	पा	ड
ज	स	ड़	प	न	गु	सः	स	प	ल	ल	नः
ता	सः	क्रा	श्री	ग	ङ	त्स्या	ए	न	स	श्री	घ
गी	त	भ	च	र	म	मा	पि	र	बु	प	र

पर्व मांगल्य

इन्द्रियों पर विजय पाने का पर्व विजयादशमी

- पूज्य बापूजी

(१3 अक्टूबर)

सम्पूर्ण विजय का दिन

इन्द्रियों पर विजय पाने का पर्व, बहिर्मुख से अंतर्मुख होने का पर्व, अन्याय पर न्याय की जीत का पर्व, तमोगुण पर दैवी शक्ति व सत्त्वगुण की विजय का पर्व, दुष्कर्म पर सत्कर्म के प्रभाव का पर्व, भोग के ऊपर संयम व योग की जीत का पर्व तथा आसुरी वृत्ति पर देवत्व वृत्ति एवं पशुता पर मानवता की विजय और जीवभाव पर शिवभाव की विजय का पर्व है 'विजयादशमी'। आज तक मानते थे, 'हम जीव हैं, हम पापी हैं, पुण्यात्मा हैं, दुःखी हैं, सुखी हैं... ।' ये मान्यताएँ जीवत्व की थीं लेकिन सुख-दुःख और मान्यताएँ आ-आ के बदल जाती हैं, उनको जो जानता है वह शिव ही तो मेरा आत्मा है, वह हरि ही तो मेरा आत्मा है। मैं तुच्छ जीव नहीं हूँ, हरि का शाश्वत अंश हूँ। मैं फलानी जाति या मजहब का अथवा फलानी आकृति का केवल शरीरधारी नहीं हूँ, शरीर मरने के बाद भी रहनेवाला अमर आत्मा, हरि का सनातन सपूत हूँ। हरि ॐ... ॐ...

सीमा-उल्लंघन अर्थात् अपनी सीमा से शत्रु की सीमा में प्रवेश करने और उस पर विजय पाने का दिवस है विजयादशमी। श्रीरामचन्द्रजी ने विजयादशमी के दिन रावण को मार गिराया था। छत्रपति शिवाजी ने दशहरे के दिन औरंगजेब के दाँत खट्टे किये थे। रघु राजा ने धरती पर रहकर भगवान के खजांची कुबेर देवता को ललकारा : ''कौत्स ब्राह्मण अपने गुरु वरतंतु ऋषि को १४ करोड़ स्वर्ण मुहरें अर्पण करने का संकल्प लेकर मेरे पास आया है। मुझे इस ब्राह्मण के संकल्प की पूर्ति करनी है। मैं क्षत्रिय हूँ। तुम्हारे से माँगता नहीं हूँ, तुम्हें आदेश देता हूँ कि कर के रूप में मेरे को १४ करोड़ स्वर्ण मुहरें दे दो, अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।'' धनुष पर बाण चढ़ाया।

कुबेर भंडारी ने कहा : ''नहीं राजन् ! मैं अभी-अभी स्वर्ण मुहरों की वर्षा कर देता हूँ।'' और दशहरे के दिन ही रघु राजा अपने संकल्प में सफल हुए।

विजयादशमी हमें हमारी पाँच कर्मेन्द्रियाँ व पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ - इन दसों पर नियंत्रण पाकर बीच-बीच में अंतर्यामी परमात्मा में आराम पाने व तुच्छ विषय-विकारों के आकर्षण पर विजय पाने का संदेश देती है।

संकल्प शीघ्र फलित करने का दिन

विजय का दिवस विजयादशमी बिना मुहूर्त का मुहूर्त है । इस पूरे दिन कोई भी शुभ कार्य करने के लिए शुभ मुहूर्त नहीं देखना पड़ता । इस दिन किसी भी वस्तु, परिस्थिति को नियंत्रित करने का संकल्प जल्दी फलता है। विजय के नक्षत्र व ग्रह विजय दिलाने में सहायता करते हैं । विजयादशमी विरोधी पर विजय पाने का दिन है । विरोधी दो प्रकार के होते हैं। एक तो बाहर के विरोधी होते हैं । धन-दौलत, कुर्सी-सत्ता के कारण, सिद्धांत, वाद और विवाद के कारण बाह्य जगत के विरोधी। इन पर विजय पाना बहुत बड़ी बात नहीं है। दूसरे अंतरंग विरोधी होते हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, विषाद आदि हमको फिसलाकर वह करवा लेते हैं जो हम नहीं चाहते हैं। ये आभ्यंतर शत्रु हैं । बाहर के शत्रु तो यहीं तक हैं लेकिन आभ्यंतर शत्रु तो मरने के बाद भी पीछा नहीं छोड़ते।

इन भीतर के शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विजयादशमी के दिन भगवन्नाम का आश्रय लेकर उसका थोड़ा-सा गुंजन करें और भीतर के शत्रुओं को कल्पना करके बाहर ले आयें और पौरुष की गदा या भगवन्नामरूपी तीर की नोक उन पर दे मारें।

आभ्यंतर शत्रुओं का मूल दो ही सूत्र हैं - राग और द्वेष । तो दशहरे के दिन बंधनों से मुक्त होने का संकल्प करो कि 'राग व द्वेष से मुक्त होंगे, चिंता व भय से मुक्त होंगे ।' क्या करेंगे ? 'जहाँ राग नहीं जाता, द्वेष नहीं जाता, भय व चिंता नहीं जाती अपितु इन सबको जो जानता है और सब चले जाते हैं फिर भी जो ज्यों-का-त्यों हमारे साथ रहता है, वह **वासुदेवः सर्वं इति...** सबमें मेरे वासुदेव की मूल सत्ता है। ॐ आनंद... ॐ शांति...' इस प्रकार चिंतन करते हुए शांत होने से राग और द्वेष शांत हो जायेंगे। द्वेष दूसरे से होता है। जब सबमें अपना-आपा है तो द्वेष कहाँ टिकेगा ! राग भी दूसरे से होता है। कितना भी सुंदरा-सुंदरी हो, अपने-आप पर राग नहीं होगा। कितना भी कुरूप-कुरूपी हो, अपने-आपसे द्वेष नहीं होगा, दूसरे से होता है। तो द्वैत की बुद्धि मिटाने का संकल्प करना - यह भी दशहरे का संदेश है। आपकी दसों दिशाओं में मंगलमय दृष्टि बन जाय।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥

सर्वदा, सब कार्यों में उन लोगों के लिए अमंगल है ही नहीं, जिनके हृदय में हृदयस्थ भगवान की आस्था है, राग-द्वेष से पार परमात्मा ही सत्य है ऐसी आस्था है। **मंगलायतनं...** 'आत्मदेव से ही यह तन चलता है और वही सत्य है' जो ऐसा मानते हैं, शरीर को मिथ्या मानते हैं, दुःख-सुख को मिथ्या मानते हैं, 'दुःख-सुख आता-जाता है, राग-द्वेष आता-जाता है फिर भी जो रहता है वह 'मैं' सत्य हूँ।' - ऐसा जो जान लेते हैं, उनके लिए सर्वदा, सब कार्यों में अमंगल होता ही नहीं क्योंकि उनके हृदय में मंगलमय भगवान का अस्तित्व है । तो आप मंगलमय भगवान को, अपने हृदय का जो वास्तविक स्वामी है उसको अपना मानो। श्वास अंदर जाय तो भगवान का नाम, बाहर आये तो गिनती अथवा होंठों में भगवान के नाम का जप, फिर कंठ में, फिर हृदय में। आपके हृदय में 'मंगलायतनं हरिः' का ज्ञान, हरि में विश्रांति, हरि की मस्ती आने से सब मंगल-ही-मंगल हो जायेगा।

दशहरे के दिन आप संकल्प करो कि अब हमारा जीवन मंगलमय होगा। किसीके प्रति द्वेष का विचार आयेगा तो 'मंगलायतनं हरिः' का सुमिरन करके उसे शांत करेंगे। राग आयेगा **(शेष पृष्ठ २९ पर)**

संयम की शक्ति

भारतीय मनोविज्ञान कितना यथार्थ !

(अंक २४६ से आगे)

आज के बड़े-बड़े डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक भारत के ऋषि-मुनियों की ब्रह्मचर्य-विषयक विचारधारा का, उनकी खोज का समर्थन करते हैं । **डॉ. ई. पैरियर** का कहना है : ''यह एक अत्यंत झूठा विचार है कि 'पूर्ण ब्रह्मचर्य से हानि होती है ।' नवयुवकों के शरीर, चरित्र और बुद्धि का रक्षक पूर्ण ब्रह्मचर्य ही है।''

ब्रिटिश सम्राट के चिकित्सक सर जेम्स पेजन लिखते हैं : 'ब्रह्मचर्य से शरीर और आत्मा को कोई हानि नहीं पहुँचती। अपने को नियंत्रण में रखना सबसे अच्छी बात है।'

आजकल के जो मनोचिकित्सक और यौन-विज्ञान के ज्ञाता समाज को अनैतिकता, मुक्त साहचर्य (Free Sex) और अनियंत्रित विकारी सुख भोगने का उपदेश देते हैं, उनको डॉ. निकोलस की बात अवश्य समझनी चाहिए । **डॉ. निकोलस कहते हैं : ''वीर्य को पानी की भाँति बहानेवाले आजकल के अविवेकी युवकों के शरीर को भयंकर रोग इस प्रकार घेर लेते हैं कि डॉक्टर की शरण में जाने पर भी उनका उद्धार नहीं होता और अंत में बड़ी कठिन रोमांचकारी विपत्तियों का सामना करने के बाद असमय ही उन अभागों का महाविनाश हो जाता है।''**

वीर्यरक्षा से कितने लाभ होते हैं यह बताते हुए **डॉ. मोलविल कीथ (एम.डी.)** कहते हैं : ''वीर्य तुम्हारी हड्डियों का सार, मस्तिष्क का भोजन, जोड़ों का तेल और श्वास का माधुर्य है । **यदि तुम मनुष्य हो तो उसका एक बिंदु भी नष्ट मत करो** जब तक कि तुम पूरे ३० वर्ष के न हो जाओ और तभी भी केवल संतान उत्पन्न करने के लिए ही ! उस समय स्वर्ग के प्राणधारियों में से कोई दिव्यात्मा तुम्हारे घर में आकर जन्म लेगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।''

हमारे ऋषि-मुनियों ने तो हजारों-लाखों वर्ष पहले वीर्यरक्षा और संयम से दिव्य आत्मा को अवतरित करने की बात बतायी है लेकिन पाश्चात्य बुद्धिजीवियों से प्रभावित हमारे देश के शिक्षित लोग उन महापुरुषों के वचनों को मानते नहीं थे । अब पाश्चात्य चिकित्सकों की बात मानकर भी यदि वे संयम के रास्ते चल पड़ेंगे तो हमें प्रसन्नता होगी। हिन्दू धर्मशास्त्रों के उपदेशों को विधर्मी एवं नास्तिक लोग स्वीकार न करें यह सम्भव है पर अब जबकि उन्हीं बातों को विज्ञानी स्वीकार कर रहे हैं और अपनी भाषा में ब्रह्मचर्य की आवश्यकता बता रहे हैं, तब सबको उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा और सीधे नहीं तो अनसीधे ढंग से भी उनको भारतीय संस्कृति की शरण में आना ही पड़ेगा। इसीमें उनका कल्याण निहित है।

ब्रह्मचर्य से कितने लाभ होते हैं यह बताते हुए **डॉ. मोंटेगाजा** कहते हैं : ''सभी मनुष्य, विशेषकर नवयुवक ब्रह्मचर्य के लाभों का तत्काल अनुभव कर सकते हैं । इससे स्मृति की स्थिरता और धारणा एवं ग्रहण शक्ति बढ़ जाती है । बुद्धिशक्ति तीव्र हो जाती है, इच्छाशक्ति बलवती हो जाती है । सच्चारित्र्य से सभी अंगों में एक ऐसी शक्ति आ जाती है जिसकी विलासी लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। ब्रह्मचर्य से हमें परिस्थितियाँ एक विशेष आनंददायक रंग में रँगी हुई प्रतीत होती हैं।

ब्रह्मचर्य अपने तेज-ओज से संसार के प्रत्येक पदार्थ को आलोकित कर देता है और हमें कभी न समाप्त होनेवाले विशुद्ध एवं निर्मल आनंद की अवस्था में ले जाता है, ऐसा आनंद जो कभी नहीं घटता ।''
(क्रमशः)

सुख, शांति व पुण्य का वर्धक : श्राद्ध

(श्राद्ध : १९ सितम्बर से ४ अक्टूबर)

- पूज्य बापूजी

आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को 'पितृ पक्ष' या 'महालय पक्ष' बोलते हैं। **श्रद्धया दीयते यत्र, तच्छ्राद्धं परिचक्षते।** 'श्रद्धा से जो पूर्वजों के लिए किया जाता है, उसे 'श्राद्ध' कहते हैं।' आपका एक माह बीतता है तो पितृलोक का एक दिन होता है। साल में एक बार ही श्राद्ध करने से कुल-खानदान के पितरों को तृप्ति हो जाती है।

श्राद्ध क्यों जरूरी है ?

जो श्राद्ध करते हैं वे स्वयं भी सुखी-सम्पन्न होते हैं और उनके दादे-परदादे, पुरखे भी सब सुखी होते हैं। श्राद्ध के दिनों में पितर आशा रखते हैं कि हमारे बच्चे हमारे लिए कुछ-न-कुछ अर्पण करें, हमें तृप्ति हो। शाम तक वे इधर-उधर निहारते रहते हैं। अगर श्राद्ध नहीं करते तो वे दुत्कारकर चले जाते हैं। फिर घर में कोई-न-कोई मुसीबतें, आपदाएँ बनी रहती हैं सब धन-दौलत होते हुए भी।

'हारीत स्मृति' में लिखा है : 'जिसके घर में श्राद्ध नहीं होता उनके कुल-खानदान में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते। कोई निरोग नहीं रहता। लम्बी आयु नहीं होती और किसी-न-किसी तरह का झंझट और खटपट बनी रहती है। किसी तरह कल्याण नहीं प्राप्त होता।'

'विष्णु पुराण' में लिखा है : 'श्राद्ध से ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, वरुण, अष्टवसु, अश्विनीकुमार, सूर्य, अग्नि, वायु, ऋषि, पितृगण, पशु-पक्षी, मनुष्य और जगत भी संतुष्ट होता है। श्राद्ध करनेवाले पर इन सभीकी प्रसन्न दृष्टि रहती है।' वह इतने लोगों को संतुष्ट करने में सक्षम होता है तो स्वयं असंतुष्ट कैसे रहेगा !

यदि श्राद्ध करने की शक्ति न हो तो...

श्राद्ध पक्ष में अपनी शक्ति के अनुसार श्राद्ध करना चाहिए। चीज-वस्तु लाने की ताकत नहीं हो तो साग से ही श्राद्ध करें। साग खरीदने की भी शक्ति नहीं है

तो हरा चारा काटकर गाय माता को खिला दें और हाथ ऊपर कर दें कि 'हे पितरो ! आपकी तृप्ति के लिए मैं गाय को तृप्त करता हूँ, आप उसीसे तृप्त हो जाइये ।' तभी भी उस व्यक्ति का भाग्य बदल जायेगा।

गाय को घास देने की भी शक्ति नहीं है तो जिस तिथि में पिता-माता चले गये, उस दिन स्नान करके पूर्वाभिमुख होकर दोनों हाथ ऊपर करें : 'हे भगवान सूर्य ! मैं लाचार हूँ। कुछ नहीं कर पाता हूँ। आप मेरे पिता-माता, दादा-दादी... (उनका नाम तथा उनके पिता का नाम व कुल-गोत्र का नाम लेकर) को तृप्त करें, संतुष्ट करें ।' जिसके पास साधन-सामग्री है और लाचार-लाचार करते हैं, वे लाचार बन जायेंगे लेकिन जो सचमुच लाचार हैं, उन पर भगवान विशेष कृपा करते हैं। आपकी प्रार्थना से जब पितर तृप्त और संतुष्ट होंगे तो आपके जीवन में धन-धान्य, तृप्ति-संतुष्टि चालू हो जायेगी।

श्राद्ध का ऐतिहासिक प्रमाण

भगवान श्रीरामचन्द्रजी वनवास के समय पुष्कर में ठहरे थे। दशरथजी स्वर्गवासी हो गये और श्राद्ध की तिथियाँ आयीं । रामजी ऋषि-मुनियों, ब्राह्मणों को आमंत्रण दे आये। जो कुछ कंदमूल भाई लक्ष्मण को लाना था, लाया और सीताजी ने सँवारा। सीताजी ब्राह्मणों को भोजन परोसने लगीं और रामजी भी देने लगे लेकिन अचानक जैसे शेर को देख के हिरनी कूदकर भाग जाती है जंगल में, ऐसे ही सीताजी झाड़ियों में चली गयीं । रामजी ने लक्ष्मण की मदद ली, सीता की जगह परोसकर ब्राह्मणों को भोजन कराया। जब वे सब चले गये तो जैसे डरी-डरी हिरनी आती है ऐसे सीताजी आयीं।

''सीते ! आज का तेरा व्यवहार मुझे आश्चर्य में डाले बिना नहीं रहता है।''

सीताजी बोलीं : ''नाथ ! क्या कहूँ, जिनको श्राद्ध के निमित्त बुलाया था वे बैठे, इतने में आपके पिताजी, मेरे ससुरजी मुझे उनमें दिखाई दिये। अब ससुरजी के आगे ऐसे वल्कल पहनकर मैं कैसे घूमूँगी ! इसलिए मैं शर्म के मारे भाग गयी।'' ऐसी कथा आती है।

श्राद्ध के लिए उचित स्थान

गया, पुष्कर, प्रयाग, हरिद्वार तीर्थ अथवा गौशाला, देवालय या नदी-तट भी श्राद्ध के लिए उत्तम जगह मानी जाती है। नहीं तो अपने घर में ही परमात्मदेव के नाम से पानी छिटक के गोबर अथवा गोधूलि, गोमूत्र आदि से लीपन करके फिर श्राद्ध करें तो भी पवित्र माना जाता है। श्राद्ध में जब तुलसी के पत्तों का उपयोग होता है तो पितर प्रलयपर्यंत तृप्त रहते हैं और ब्रह्मलोक तक जाते हैं।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः ॥

'देवताओं, पितरों, महायोगियों, स्वधा और स्वाहा को मेरा सर्वदा नमस्कार है, नमस्कार है।'

(अग्नि पुराण : ११७.२२)

श्राद्ध के आरम्भ व अंत में इस मंत्र का तीन बार उच्चारण करने से श्राद्ध की त्रुटियाँ क्षम्य हो जाती हैं, पितर प्रसन्न हो जाते हैं और आसुरी शक्तियाँ भाग जाती हैं।

पितरों की संतुष्टि देती सुखमय जीवन

आपके घर मेहमान आ गये २५, आपने सबको खानपान का अनुरोध किया। किसीने खाया, किसीने नहीं खाया लेकिन आपके मधुमय व्यवहार से सब तृप्त होकर गये। ऐसे ही आपको मैं खिलाता नहीं हूँ लेकिन आपका मंगल हो इस भावना से बोलता हूँ और आप लोग तृप्त होकर जाते हैं। बदले में आप मेरे लिए क्या-क्या तृप्ति की भावना करते हैं। तो आपका संकल्प भी तो काम करता है ! तो जैसा आप देते हैं वैसा अनंत गुना आपको मिलता है । श्राद्ध करने से पितरों को आप तृप्त करते हैं तो वे भी आपको तृप्ति की भावनाओं से तृप्त करते हैं। श्राद्धकर्म करनेवाले

की दरिद्रता चली जायेगी । रोग और बीमारियाँ भगाने की पुण्याई बढ़ जायेगी । स्वर्गीय वातावरण बन जाता है घर में । आयु, प्रज्ञा, धन, विद्या और स्वर्ग आदि की प्राप्ति के लिए श्राद्ध फायदेवाला है । श्राद्ध से संतुष्ट होकर पितृगण श्राद्धकर्ता को मुक्ति के रास्ते भी प्रेरित करते हैं।

श्राद्ध में रखें ये सावधानियाँ

* पितरों को खिलाये बिना नहीं खायें । पराया अन्न भी नहीं खाना चाहिए।

* श्राद्धकर्ता श्राद्ध पक्ष में पान खाना, तेल-मालिश, स्त्री-सम्भोग, संग्रह आदि न करे।

* श्राद्ध का भोक्ता दुबारा भोजन तथा यात्रा आदि न करे। श्राद्ध खाने के बाद परिश्रम और प्रतिग्रह से बचें।

* श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति ३ से ज्यादा ब्राह्मणों तथा ज्यादा रिश्तेदारों को न बुलाये।

* श्राद्ध के दिनों में ब्रह्मचर्य व सत्य का पालन करें और ब्राह्मण भी ब्रह्मचर्य का पालन करके श्राद्ध ग्रहण करने आये।

श्राद्ध पक्ष का संदेश

भगवान कहते हैं : 'वैदिक रीति से अगर आप मेरे स्वरूप को नहीं जानते हो तो श्रद्धा के बल से जिस-जिस देवता के, पितर के निमित्त जो भी कर्म करते हो, उन-उनके द्वारा मेरी ही सत्ता-स्फूर्ति से तुम्हारा कल्याण होता है । देवताओं को पूजनेवाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजनेवाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजनेवाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करनेवाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं। इसलिए मेरे भक्तों का पुनर्जन्म नहीं होता।' अतः श्राद्ध तो करो लेकिन 'पितरों में, देवताओं में जो सत्ता है, वह मेरे प्रभु की है ।' प्रभु की सत्ता सर्वत्र देखने से सर्वेश्वर प्रभु की स्मृति हो जायेगी। आपका कर्म परमात्मा को संतुष्ट करनेवाला हो जायेगा।

* * *

'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन

जिन्हें अपने पूर्वजों की परलोकगमन की तिथियाँ मालूम नहीं हैं, उन्हें सर्वपित्री अमावस्या (४ अक्टूबर) के दिन श्राद्ध करना चाहिए। आश्रम की प्रमुख शाखाओं में इस दिन 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन होता है, जिसमें आप सहभागी हो सकते हैं । इस हेतु अपने नजदीकी 'संत श्री आशारामजी आश्रम' में ३० सितम्बर तक पंजीकरण करा लें । श्राद्ध के लिए आवश्यक सामग्री श्राद्ध-स्थल पर उपलब्ध रहेगी । अपना वस्त्र, आसन लेकर आयें। सामूहिक भोजन आश्रम में ही होगा। अधिक जानकारी हेतु पहले ही अपने नजदीकी आश्रम से सम्पर्क कर लें।

(श्राद्ध से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम की पुस्तक 'श्राद्ध महिमा' पढ़ें।)

(पृष्ठ २५ 'ईन्द्रियों पर' का शेष) तो विचारेंगे कि राग क्या करना ! बड़े-बड़े सिकंदर व दारा जैसे चले गये। 'यह कर देंगे, वह कर देंगे...' अरे, सोने की लंका पा ली तो भी राग-द्वेष नहीं गया तो हर १२ महीने में दे दियासलाई ! हर साल रावण-दहन होता है । रावण तो एक बार ही मरता है लेकिन हर साल समाज की स्मृति में आये कि सोने की लंका पाने के बाद भी अगर राग-द्वेष से पार 'मंगलायतनं हरिः' में नहीं गये तो सोने की लंका भी सुख नहीं दे सकी तो नेताओं के बड़े-बड़े आश्वासनभरे भाषणों से तुम्हारा दुःख क्या मिट जायेगा ! 'यह कर देंगे, वह कर देंगे, यह विकास कर देंगे...' कुछ भी कर दे नेता, पर तू सोने के घर तो नहीं बना सकता ! और सोने की लंकावाला रावण भी संसार से निर्दुःख नहीं गया और उसके लोग भी निर्दुःख नहीं गये तो हमको तुम क्या दे दोगे ! हम तो 'मंगलायतनं हरिः' का राग-द्वेष से पार करनेवाला सत्संग सुनेंगे तथा भगवान की प्रीति व प्रसन्नता के लिए काम करेंगे।

शास्त्र दोहन

इष्टनिष्ठा, दृढ़ता व आत्मविश्रांति से सफलता

हनुमानजी श्रीरामजी की आज्ञा से दूत बनकर सीताजी के पास लंका जा रहे थे। रास्ते में देवताओं, गंधर्वों आदि ने उनके बल, पराक्रम व सेवानिष्ठा की परीक्षा के लिए नागमाता सुरसा को प्रेरित किया। तब सुरसा ने विकराल राक्षसी का रूप बनाया और समुद्र लाँघ रहे हनुमानजी को घेरकर अट्टहास करने लगी : ''हाऽऽऽ... हाऽऽऽ... हाऽऽऽ... कपिश्रेष्ठ ! आज विधाता ने तुम्हें मेरा भोजन बनाया है, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी। तुम शीघ्र मेरे मुँह में आ जाओ।'' ऐसा कहकर उसने अपना भयंकर मुँह खोला।

एक सच्चे सेवक के लिए स्वामी की सेवा, उनकी आज्ञा से बढ़कर कुछ नहीं होता। **'राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ।'** - ऐसी निष्ठावाले हनुमानजी ने नम्रतापूर्वक सुरसा से कहा : ''देवी ! मैं श्रीरामजी की आज्ञा से लंका जा रहा हूँ। सीताजी के दर्शन कर रामजी से जब मिल लूँगा, तब तुम्हारे मुँह में आ जाऊँगा। यह तुमसे सच्ची प्रतिज्ञा कर के कहता हूँ।''

सुरसा हँसने लगी : ''नहीं अंजनीसुत ! मुझे विधाता ने वर दिया है कि 'कोई तुम्हें लाँघकर आगे नहीं जा सकता।' तुम्हें मेरे मुँह से प्रवेश करके ही आगे जाना होगा।''

एक ओर मृत्यु तो दूसरी ओर स्वामी की आज्ञा थी। ऐसी विकट परिस्थिति में भी हनुमानजी विचलित नहीं हुए बल्कि अपने अंतर्यामी राम में शांत हो गये। तुरंत अंतर्प्रेरणा मिली और वे सुरसा से बोले : ''तो ठीक है, तुम अपना मुँह इतना विशाल बनाओ कि मुझे समा सके।'' सुरसा ने अपना मुँह १ योजन (८ मील या करीब १३ कि.मी.) विस्तृत बना लिया तो हनुमानजी १० योजन बड़े हो गये। यह देखकर सुरसा ने अपना मुँह २० योजन जितना फैला दिया। तब हनुमानजी ३० योजन के हो गये। बढ़ते-बढ़ते हनुमानजी जब ९० योजन शरीरवाले हुए तब सुरसा ने अपने मुँह का विस्तार १०० योजन बना लिया, जो एक भयंकर नरक के समान दिख रहा था।

तब बुद्धिमान वायुपुत्र ने झट्-से अपना शरीर

अँगूठे जितना बनाया और तीव्र वेग से सुरसा के मुँह में प्रवेश कर बाहर निकल आये । वे सुरसा से बोले : ''नागमाता ! मैं तुम्हारे मुँह में प्रवेश करके आ चुका हूँ, इससे तुम्हारा वरदान भी सत्य हो गया । अब मैं श्रीरामजी की सेवा में जा रहा हूँ ।''

हनुमानजी की स्वामिनिष्ठा और सेवा में तत्परता देखकर सुरसा ने अपने असली रूप में प्रकट होकर उनको सेवा में शीघ्र सफलता का आशीर्वाद दिया । हनुमानजी की अपने इष्ट की सेवा में निष्ठा एवं बुद्धि-चातुर्य देखकर सब देवता, गंधर्व आदि भी उनकी प्रशंसा करने लगे ।

इस प्रकार पहले तो हम अपने जीवन में ऊँचा लक्ष्य बना लें, जैसे हनुमानजी ने लक्ष्य बनाया - अपने इष्ट, अपने आध्यात्मिक पथप्रदर्शक की निष्काम सेवा का । दूसरा, हम अपने उस सत्संकल्प, अपने उस ऊँचे लक्ष्य के प्रति इतने दृढ़ हो जायें कि हमारे भी जीवन में हनुमानजी की वह अडिगता, निष्ठा हर प्रकार से फूट निकले कि 'प्राणिमात्र के परम हितैषी मेरे सर्वेश्वर का दैवी कार्य किये बिना मुझे विश्राम कहाँ ?' और तीसरी बात, कार्य के बीच-बीच में एवं जब विकट परिस्थितियाँ आयें तब

अपने हृदय में सत्ता-स्फूर्ति-सामर्थ्य के केन्द्र के रूप में सदैव विराजमान उस अंतर्यामी में थोड़ा शांत हो जायें, निःसंकल्प हो जायें । इससे दैवी कार्य को उत्तम ढंग से सम्पन्न करने की सुंदर सूझबूझ व सत्प्रेरणा हमें मिलेगी । सब हमारी प्रशंसा भी कर लें तो भी हमारी अपनी देह में नहीं, अंतर्यामी में आत्मीयता, निष्ठा और सजगता सुदृढ़ होने से हम अपने ऊँचे लक्ष्य से गिर नहीं पायेंगे और केवल उस दैवी कार्य को ही नहीं, अपने जीवन को भी परम सफल बना लेंगे ।

***

महाविजेता होने की कुंजी

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

जगत में जो भी दोष हैं - छोटे-मोटे दुःख-सुख से लेकर बड़े-बड़े भारी दुःख और सुख, यहाँ तक कि जन्म और मृत्यु का भी जो दुःख है, वह दुःख भी चित्त के दोष से होता है । बार-बार हम जन्म लेते हैं, माता के गर्भ में उलटे लटकते हैं, फिर संसार में आते हैं, बचपन का कष्ट सहते हैं... कदम-कदम पर पराधीनता महसूस करते हैं । जवानी में काम-क्रोध सताता है, राग-द्वेष सताता है, भय, चिंता, घृणा, ईर्ष्या, स्पर्धा सताती है; बुढ़ापे में रोग सताते हैं और अंत में मौत तो सबके लिए खड़ी है । ये सारे-के-सारे जो दुःख हैं वे चित्त के दोष से प्राप्त होते हैं ।

ऐसा नहीं है कि हम धनवान नहीं हैं इसलिए दुःखी हैं, हमारे पास प्रमाणपत्र नहीं है इसलिए हमारा जन्म-मरण होता है, हम कुँआरे हैं इसलिए जन्म-मरण होता है या शादी की है इसलिए जन्म-मरण होता है । नहीं, हमने अपने चित्त को चैतन्य के प्रसाद से अतृप्त रखा है इसलिए हमारा चित्त सुख के लिए बाहर प्रवृत्ति कर-करके क्षणिक सुख में उलझ रहा है । क्षणिक सुख में उलझते-उलझते हमारा चित्त यह महसूस करता है कि 'इतना हो जाय, इतना मिल जाय, इतना और ले लूँ, इतना और कर लूँ...' लेकिन उस चित्त को इतना करने से, इतना लेने से, इतना बनने से भी पूर्ण संतोष कभी नहीं होता । पूर्ण तो एक परमात्मा है । चित्त को उस परमात्मा में टिकाने के लिए यह श्लोक हमें उपाय बता रहा है :

सत्संगो वासनात्यागः स्वात्मज्ञानविचारणम् ।
प्राणस्पंदननिरोधश्च इत्युपायाः चेतसो जयेत् ॥

'सत्संग, वासना का त्याग, अपने आत्मा के ज्ञान का विचार और प्राण के स्पंदन का निरोध - इन उपायों से चित्त को जीतें ।'

ज्ञान गंगोत्री

दुःख को उत्सव बनाने की कला

- पूज्य बापूजी

हम दुःख चाहते नहीं हैं, दुःख भगवान ने बनाया नहीं है और दुःख हमको पसंद नहीं है फिर भी दुःख क्यों होता है ? क्योंकि ईश्वरीय रहस्य को, ईश्वरीय लीला को, ईश्वरीय ज्ञान को हम नहीं जानते। हमारे मन की कल्पनाओं से हम दुःख बना लेते हैं, सुख बना लेते हैं । वास्तव में अनुकूलता जहाँ होती है, उसको हम सुख बोलते हैं और प्रतिकूलता होती है, उसको हम दुःख बोलते हैं।

शास्त्र बोलते हैं : **अनुकूलवेदनीयं सुखं प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम् ।** तो यह अनुकूलता और प्रतिकूलता विधायक का विधान है, उस विधाता का विधान है। अनुकूलता देकर वे आपको उदार बनाते हैं ताकि आप उनकी तरफ आओ और प्रतिकूलता देकर वे आपकी आसक्ति मिटाते हैं । विधान जो होता है न, वह मंगल के लिए होता है । हमको जो अच्छा नहीं लगता है वह भी होता है तो समझो विधान कल्याणकारी है और जो हमको अच्छा लगता है वह हमसे छीन लेता है तो समझो विधान की कृपा है। लेकिन हम क्या करते हैं कि जो अच्छा लगता है वह छीना जाता है तो हमारी दुःखाकार वृत्ति बनती है और 'हम दुःखी हैं' ऐसी अपने में बेवकूफी भरते हैं। लेकिन ऐसा दुःख और परेशानी कोई नहीं है जिसमें हमारा कल्याण छिपा न हो। इसलिए कभी भी दुःख और परेशानी आये तो समझ लेना विधायक का विधान है । हमारा कल्याण करने के लिए आया है, आसक्ति छुड़ाने को आया है, संसार से मोह-ममता छुड़ाने को आया है। 'वाह प्रभु, वाह ! तेरी जय हो !'

दुःख को आप भजन में बदल सकते हैं, दुःख को आप ज्ञान में बदल सकते हैं, दुःख को विवेक में बदल सकते हैं, दुःख को दुःखहारी परमात्मा में बदल सकते हैं । दुःख आपके लिए भगवान की प्राप्ति का साधन हो जायेगा। अगर सुख आये और उसके भोगी बने तो सुख आपको खोखला बना देगा। सुख आया तो जो उसके भोगी बने हैं, वे नरकों में पड़े हैं, बीमार पड़े हैं।

तो आपको अगर जल्दी से दुःखों से पार होना हो तो सुख का लालच छोड़ दो। सुख का लालच छोड़ते ही आपका आपके अंतरात्मा के साथ जो संबंध है, वह स्पष्ट होगा । जैसे पानी के ऊपर की काई हटा देने से पानी दिखता है, ऐसे ही सुख का लालच हटाने से सुख का, मधुमय आनंद का दरिया लहराने लगेगा। दुःख के भय से आप भयभीत न हों। दुःख आये तो उत्सव मनाओ : 'वाह ! आ गया, वाह-वाह ! भला हुआ, अच्छा है । ये दुःख और कष्ट आसक्ति मिटाकर हरि में प्रीति जगानेवाले हैं, वाह भाई ! वाह !!' तो बाहर से दुःख दिखेगा लेकिन तुम्हारे ईश्वरीय संबंध के स्मरण से दुःख भी सपना हो जायेगा, सुख भी सपना हो जायेगा, आनंदस्वरूप परमात्मा अपना हो जायेगा।

जैसे बौद्धों का शून्य, भक्तों का प्रेम, प्रार्थियों का लक्ष्य, योगी की निर्विकल्प समाधि और ज्ञानी का चैतन्य है, वैसे ही हम साधकों के तो मेरे सद्गुरु चैतन्य हैं । (पुस्तक 'मुक्तेश्वरी' से)

संत कबीरजी ने कहा है :

अलख पुरुष की आरसी, साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को, इन्हीं में तू लख लेह ॥

चिंतनधारा

तौबा-तौबा ! कैसी दुःखदायी है ममता !

- पूज्य बापूजी

तुलसी ममता राम सों,
समता सब संसार।

ममता अगर करनी है तो अंतर्यामी प्रभु से करो। 'बेटे का क्या होगा, बेटी का क्या होगा, दुकान का क्या होगा, फलाने का क्या होगा, फलानी का क्या होगा ?' - ऐसा सोचते रहनेवाले दुःखी होकर मर जाते हैं। फिर कहाँ जायेंगे, कौन-सी योनि में भटकेंगे कोई पता नहीं। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति ऐसी लाचारी की स्थिति नहीं चाहता है। जैसे घर से निकलने से पहले ही बुद्धिमान व्यक्ति यह सोच लेता है कि कहाँ जायेंगे, क्या खायेंगे, कहाँ रहेंगे आदि। ऐसे ही जीवन की शाम होने से पहले वह सोच लेता है कि 'मर जायेंगे तो हमारा क्या होगा ?'

एक दादा-दादी थे। उनकी बहू के दो बच्चे थे - एक बेटा, एक बेटी। दादा-दादी को अपने पोते-पोती से बहुत प्रेम था। मरने के बाद वे कुत्ता-कुत्ती बन गये और जब पोता-पोती बाहर शौच करने को बैठते तो दोनों रखवाली करते। कोई यात्री आये या कोई दूसरा कुत्ता वहाँ से पसार हो तो कुतिया खूब भोंकती थी। एक दिन बहू को गुस्सा आया कि कुतिया रोज शोर मचाती है। उसने उठाकर डंडा दे मारा तो कुतिया की कमर टूट गयी। दोनों पैरों को घसीटते-घसीटते लँगड़ाकर चलती। अब उसका भोंकना कम हो गया।

दैवयोग कहो, सर्वसमर्थ ईश्वर की लीला कहो उस कुत्ते और कुत्ती को पूर्वजन्म की स्मृति आ गयी। कुत्ते ने कहा : ''राँड़ ! इन बेटों, पोतों की ममता ने तो कुत्ता और कुत्ती बनाया। तू भोंकती थी और मुझे भी भोंकने को मजबूर करती थी। तेरे भोंकने का फल देख ले। कौन तेरा है ? जिस बहू को 'लाड़ी-लाड़ी' करके लाड़ करती थी और बच्चों को दूध पिलाती थी, उसीने उन बच्चों के कारण तेरी कमर तोड़ दी। अगर यही ममता भगवान से की होती तो तेरी-मेरी दुर्गति नहीं होती। अभी चुपचाप बैठ।''

बाद में बहू और बेटे को किन्हीं संत से पता चला कि 'यही हमारे माता-पिता थे ! अब कुत्ता-कुत्ती होकर आये हैं। बच्चे शौच करते हैं तो वहाँ चौकी करते हैं।'

हे भगवान ! तौबा-तौबा ! कैसी दुःखदायी है ममता ! भगवान से ममता नहीं करोगे तो पुत्र-पौत्र, मकान आदि जहाँ भी ममता होगी वहाँ आना पड़ेगा। भगवान करें कि भगवान ही आपको प्यारे लगें, भगवान ही आपको अपने लगें, भगवान करें कि भगवान में ही मन लग जाय। भगवान के नाते तत्परता से काम करो। जैसे पत्नी पति के नाते सासु की, ससुर की, जेठ की, ननद की, मेहमानों की सेवा कर लेती है ऐसे भगवान के नाते सभीसे व्यवहार करो, ममता के नाते नहीं। 'भविष्य में यह काम आयेगा, मेरा यह भला कर देगा, यह दे देगा...।' नहीं, ईश्वर के नाते कर्म करो।

नर-नारियों के रूप में, पक्षियों के रूप में, पशुओं के रूप में सब जगह चेतना उस परमेश्वर की है। हे हरि ! हे नारायण ! हे प्रभु ! बस भगवान का ज्ञान, भगवान का सुमिरन और भगवान की प्रीति। यदि प्रेम करना हो तो उसीसे करो, प्रार्थना करनी हो तो उसीसे करो, ममता करनी हो तो उसीसे करो। यदि झगड़ा करना हो तो भी उसीसे करो क्योंकि उसके जैसा सच्चा मित्र और संबंधी दूसरा कोई नहीं है।

घर-परिवार

घर के झगड़ों को कैसे बदलें प्रेम में ?

- पूज्य बापूजी

'यह बहू तो ऐसी है... क्या करें, आजकल की तो परायी जाइयाँ आयीं, जमाना बिगड़ गया है। वह ऐसी है, फलानी ऐसी है...' अरे ! तू भी तो परायी जाई है। अभी नानी और दादी बनकर बैठी है, तू इस घर की जाई है क्या ! तो सासुमाताओ ! परायी जाइयों की निंदा ना करो और बहुरानियो ! चाहे सासु थोड़ा-बहुत कहे, तुम तो कभी भी सासु की निंदा न करो। यदि आपकी पत्नी और माँ यानी सासु-बहू, देवरानी-जेठानी, ननद-भाभी आपस में भिड़ती रहती हैं तो क्या करना चाहिए ?

अकेले में पत्नी को समझाना चाहिए कि 'तू मेरी माँ की फरियाद करती है, 'माँ ऐसी है, वैसी है...' तेरी सारी बातें अगर सच्ची भी मानूँ तब भी मैंने उसका दूध पिया है, मैं उसके गर्भ में रहा हूँ, माँ की निंदा सुनने से मेरे पुण्य व मति मंद होंगे, मेरा प्रभाव नष्ट होगा और पुण्यहीन, मंद-बुद्धि, प्रभावहीन पति से तू कौन-सी संतान लेकर सुखी होगी ? इतना तो समझ ! भोली है तू। इसलिए माँ के खिलाफ मेरे को कुछ न सुनाये तो अच्छा है । मैं तो कहता हूँ कि वृद्धाओं का, माता का दिल जीतना तेरे बायें हाथ का खेल है, तू कर सकती है ।' उसको डाँटो नहीं, विश्वास में लो। वह माँ नहीं बनी है तो बोलो, 'माँ की सेवा करोगी तो तुम्हारी संतान भी ओजस्वी-तेजस्वी होगी, तुम भी अच्छी आत्मा की माँ बनोगी' अथवा माँ बनी है तो 'गुड्डू की माँ, ललुआ की माँ...' जो भी हो, उसको प्यार से समझाओ । २-५ बार ऐसा प्रयत्न करोगे तो आपका अंतःकरण पवित्र होगा और पत्नी के हृदय में सासु के प्रति जो ग्रंथि है वह खुल जायेगी । और पत्नी को युक्ति दे दो कि 'माँ कितने साल की मेहमान है ! तेरे को तो मेरे साथ जिंदगी गुजारनी है, मेरे को तेरे साथ जिंदगी गुजारनी है।' - ऐसे विश्वास में लेकर सासु-बहू का झगड़ा मिटा देना चाहिए।

देवरानी-जेठानी लड़ती हों तो क्या करें ? 'हे प्रभु ! आनंददाता !!...' प्रार्थना का घर में पाठ कराओ, देवरानी-जेठानी का झगड़ा मुहब्बत में बदल जायेगा । जेठानी का पति कहे कि 'देख ! 'देवरानी ऐसी है, वैसी है...' तू सुनाती है लेकिन वह मेरा छोटा भाई है, बेटे के बराबर है तो उसकी पत्नी तेरी और मेरी बहू के बराबर है। पगली मत बन, दिल बड़ा रख। बड़े का बड़प्पन इसीमें है कि छोटे को प्रेम से अनुकूल करे । छोटे को डाँट के, धमका के या उसके ऐब देखकर नहीं उसके गुण देख के, उसकी सराहना करके उसको अनुकूल किया जाता है ।' बड़ा भाई अपनी पत्नी को ऐसे समझाये और छोटा भाई अलग से अपनी पत्नी को कहे : 'अरे ! कुछ भी है, बड़ा भाई पिता के तुल्य होता है तो बड़ी भाभी मेरी माँ के तुल्य है। तू थोड़ा बड़ा दिल रख न ! बड़ों का तो थोड़े आदर-सत्कार से दिल पिघल जाता है, तू क्यों नहीं बात समझती है ? काहे को भोली बनती है ? 'जेठानी ऐसी है, वैसी है' लेकिन वह सब कुछ छोड़कर आयी है, तेरे जैसा त्याग तो है उसमें। तू भी पूरा मायका छोड़कर इधर आ गयी, वह भी मायका छोड़कर आ गयी। दोनों (शेष पृ. ३७ पर)

पूज्य बापूजी का आत्मसाक्षात्कार दिवस आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया तदनुसार ६ अक्टूबर २०१३

वर्ष की दूसरी नवरात्रि... चालीस दिन का अनुष्ठान नर्मदा-किनारे पूरा हुआ । तड़प बढ़ी, ऐसा महसूस होता था मानो बार-बार इष्टदेव कह रहे हों कि 'तुम लीलाशाहजी के पास जाओ, मैं वहीं मिलूँगा ।'

हम अनुष्ठान करते और अनुष्ठान की मालाएँ जब तक पूरी न हों तब तक सोना सम्भव नहीं था, हमारा नियम ऐसा था । माला करते-करते कभी बीच में दिन में कोई आ गया हो तो मालाएँ थोड़ी रुक जातीं तो नियम पूरा करने में रात का १-१:३० बज जाता । माला पूरी करके सोते तो जवानी थी, नींद ऐसी आती कि चट्-से सुबह हो जाती और सुबह हम चलते तो नर्मदाजी का बालू हमारे पैरों में घुस जाता क्योंकि जंगल में जो हमारी गुफा थी, उसमें छछूंदर घूमते थे । वे रात को हमारी चमड़ी चाटते जाते, खाते भी जाते । किसी संत ने बताया कि ''ये पैर में जो घाव हुए हैं, वह छछूंदरों ने तुम्हारे पैरों को काट खाया है ।'' उन दिनों में पता नहीं चलता था, लक्ष्य अपना उस परम तत्त्व, परम शांति को पाने का था ।

शिव-मंदिर में जाते तो शिवजी के ऊपर जो शृंगार के लिए चढ़े फूल और बेलपत्र होते थे, वे आशीर्वाद रूप में ढल पड़ते तो कभी पार्वतीजी के श्रीविग्रह से ढल पड़ते तो कभी गणपति और हनुमानजी के श्रीविग्रह से । मंदिर में जाते ही कभी-कभी ऐसी ही घटनाएँ होतीं । भक्त लोग बताते कि ईश्वर की प्रसन्नता के संकेत हैं । लेकिन इन सबके बाद भी आत्मशांति, आत्मप्राप्ति तो नहीं...

मन-ही-मन पूछते कि 'प्रभुजी ! तुम कब मिलोगे ? कैसे मिलोगे ?' तो अंदर से आवाज आती : 'गुरुचरणों में पहुँच जाओ, लीलाशाहजी के चरणों में पहुँच जाओ । हम वहीं सभी रूप में मिलेंगे।'

'तो यह कौन बोल रहा है ?'

'जिसका तुम अनुष्ठान कर रहे हो, वह बोल रहा है।'

'लेकिन ये आवाजें तो दोनों मेरी हैं, कहीं भ्रम तो नहीं है ?'

'नहीं-नहीं, तुम जाओ और हम मिलेंगे।'

गुरुजी नैनीताल से मुंबई के पास वज्रेश्वरी के एकांत जंगल में आकर किसी शांत जगह में ठहरे थे। हमने वहाँ का पता पा लिया था । चालीस दिन का अनुष्ठान पूरा होते ही हम वहाँ पहुँचे । सुबह के लगभग साढ़े नौ-पौने दस बजे होंगे। गुरुजी के दर्शन हुए, आँखों से झर-झर आँसू बरसे । गुरुजी ने निगाहों में निगाह डाली और पूछा : ''कैसे ? कहाँ से आया ?'' गुरुजी ने घर भेज दिया था। फिर हम घर से नर्मदा-किनारे गये थे। घर में रहना हमारे बस का नहीं था। गुरुदेव ने निगाहों में निगाहें डालकर देखा ईश्वरप्राप्ति की तड़प थी, आँखों में इंतजार था, दिलबर की जिज्ञासा थी। समझदारों के शिरोमणि सद्गुरु के चित्त से ये पवित्र शब्द उच्चारित हुए : ''भगवान सब भला करेंगे, अच्छा करेंगे।''

दोपहर का भोजन आदि हुआ । जरा पैर लम्बे किये, जरा-सी वामकुक्षी की, थोड़ा लेटे । इतने में सेवक आया कि ''साँईं बुला रहे हैं।'' करीब दोपहर के पौने दो बजे होंगे।

साँईं बैठे थे। एक सेवक पंचदशी का ७वाँ प्रकरण पढ़ रहा था और गुरुजी ने संकेत किया कि 'सुनना' । उसमें था - किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत्। मुझे पक्का याद है। जब हम शरीर नहीं हैं, हम शाश्वत अमर आत्मा हैं, सत्-चित्-आनंद हमारा सहज स्वभाव है यह जान लिया तो फिर शरीर के लिए किसकी इच्छा करें ? किस कामना से बँधकर संसार के तापों को यह जीव झेलेगा ? अज्ञानतावश शरीर को 'मैं' मानते हैं, संसारी चीजों को 'मेरा' मानते हैं । 'यह मिले तो सुखी हो जाऊँ, यह पाऊँ तो सुखी हो जाऊँ...'

यह मेहनत मुझे न करनी पड़ी, गुरुकृपा ने विवेक की रोशनी दी। पाना है तो उस परब्रह्म पद को पाना है। ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशेभ्यः। उस आत्मदेव को जानने से आदमी सारे बंधनों से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। बस उसकी तड़प, लगन थी। 'पंचदशी' पढ़नेवाला पढ़ रहा है, हम सुन रहे हैं और गुरुदेव अपने गुरु स्वभाव में, विश्रांतियोग में इस प्रकार बैठे थे कि आज्ञा केन्द्र पर गुरुजी का हाथ था। हम सुन रहे थे, गुरुजी के दर्शन भी कर रहे थे।

चातक मीन पतंग जब पिया बिन नहिं रह पाय।
साध्य को पाये बिना साधक क्यों रह जाय॥

गुरुजी ने जरा-सी दृष्टि डाली और पूछा : ''समझ रहा है ?'' मैंने अदब से हाथ जोड़े। फिर प्रकरण का सत्संग चलता रहा।

जिससे सारी समझें पैदा हो-होकर लीन हो जाती हैं, उस परम समझस्वरूप में सदा विचरण करनेवाले मेरे शिवस्वरूप गुरुदेव ने दूसरी दृष्टि डाली । बस, सब व्यापकता-व्यापकता, आनंद-आनंद, असीमता... वाणी तो चले कहाँ ! आँख तो खुले क्या !

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस॥
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार॥

स्थूल देह, सूक्ष्म देह, कारण देह - ये प्रकृति की हैं, इनमें परिवर्तन है। कारण देह में निद्रा आती है

और जागरण होता है, सूक्ष्म देह में विचार आते हैं, विकार आते हैं, चले जाते हैं। स्थूल देह में भी बाल्यावस्था, यौवन, बुढ़ापा आता है, बदल जाता है फिर भी जो नहीं बदलता उसमें टिकानेवाले मेरे लीलाशाहजी प्रभु को करोड़-करोड़ प्रणाम, बार-बार प्रणाम ! यह हमारे बस का नहीं था। हम प्रयत्न करते तो कर्ताभाव तो मौजूद रहता। कुछ झलकें मिलतीं तो अहंकार बढ़ता और नहीं मिलतीं तो विफलता के विषाद में गिरते। न विषाद में गिरने दिया, न अहंकार में उलझने दिया। अपने दिल में ही दिलबर से मुलाकात करानेवाले सद्गुरु लीलाशाहजी प्रभु को कितने भी प्रणाम करूँ तो भी मैं उनकी कृपा से उऋण नहीं हो सकता। तब भी कुछ समय के बाद गुरुजी के चरणों में गया। उनसे प्रार्थना की : ''आपने जो दिया है उससे उऋण होने के लिए मुझे कोई आज्ञा दीजिये, कोई सेवा दीजिये।''

मेरे प्रभु ने कहा : ''सेवा करेगा ?''

मैंने कहा : ''जी।''

''बस, जो मिला है उसमें टिको और दूसरों को जगाओ। आप पियो, औरों को पिलाओ।''

यह उन्हींका संकल्प औरों को पिला रहा है, मैं कुछ नहीं कर रहा। यह उन्हींकी प्रसादी है। साज भी उन्हींका, गीत भी उन्हींका, निमित्तमात्र यह शरीर दिखता है। साज उसीका है जो बजाना जानता है, गीत उसीका है जो गाना जानता है। वे ही गीत गा रहे हैं, वे ही साज बजा रहे हैं। हे गुरुकृपा ! तू सदैव मेरे हृदय में निवास करना।

***

(पृ.३४ 'घर के झगड़े...' का शेष) त्यागी-त्यागी आपस में लड़ रही हो एक ही जात की होकर, बड़े आश्चर्य की बात है ! मेरी परीक्षा ले रही हो क्या तुम दोनों देवरानी-जेठानी ?' ऐसा समझाकर उनको राजी कर दें।

ननद-भाभी का झगड़ा है तो पत्नी को समझा दे कि 'देख ! साल-दो साल में वह बेचारी पराये घर जायेगी, अभी उसका दिल दुखा के कन्या की बद्दुआ तू क्यों ले ! तेरे को भी कन्या होगी फिर वह दुःख देगी तो ! इसलिए माँ की कन्या तेरी अपनी कन्या से भी ज्यादा आदर के योग्य है। ननद के प्रति भाभी का उदार हृदय होना चाहिए, ऐसा शास्त्र कहते हैं।' और 'हे प्रभु ! आनंददाता !!...' प्रार्थना का घर में पाठ करो तथा पड़ोस के बच्चे-बच्चियों को बुलाकर भी पाठ करो।

संघर्ष में, एक-दूसरे की निंदा में, एक-दूसरे की गलतियाँ खोजने में, एक-दूसरे पर आरोप थोपने में हमारी शक्तियों का जितना ह्रास होता है और योग्यताएँ कुंठित होती हैं, उतनी शक्ति और योग्यता हम अगर १५ मिनट 'हरि ॐ...' का गुंजन करने में लगायें तो हमारे दीदार करनेवाले का भला हो जायेगा, ऐसी हम सबके अंदर योग्यता छुपी है।

***

जैसे बौद्धों का शून्य, भक्तों का प्रेम, प्रार्थियों का लक्ष्य, योगी की निर्विकल्प समाधि और ज्ञानी का चैतन्य है, वैसे ही हम साधकों के तो मेरे सद्गुरु चैतन्य हैं। (पुस्तक 'मुक्तेश्वरी' से)

संत कबीरजी ने कहा है :

अलख पुरुष की आरसी, साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को, इन्हीं में तू लख लेह ॥

शरीर स्वास्थ्य

स्वास्थ्य व पर्यावरण सुरक्षा का अमोघ उपाय : गाय का घी
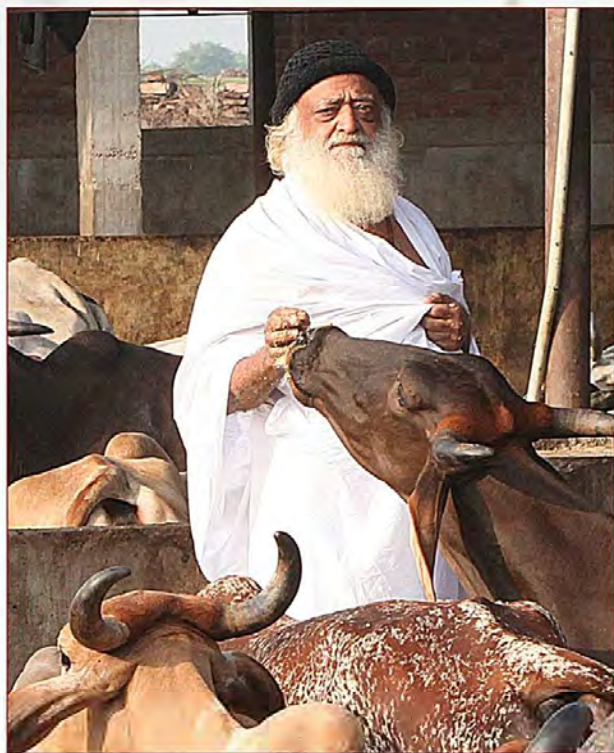
देशी गाय का घी शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास एवं रोग-निवारण के साथ पर्यावरण-शुद्धि का एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

इसके सेवन से -

(१) बल, वीर्य व आयुष्य बढ़ता है, पित्त शांत होता है।

(२) स्त्री एवं पुरुष संबंधी अनेक समस्याएँ भी दूर हो जाती हैं।

(३) अम्लपित्त (एसिडिटी) व कब्जियत मिटती है।

(४) एक गिलास दूध में एक चम्मच गोघृत और मिश्री मिलाकर पीने से शारीरिक, मानसिक व दिमागी कमजोरी दूर होती है।

(५) युवावस्था दीर्घकाल तक रहती है। काली गाय के घी से वृद्ध व्यक्ति भी युवा समान हो जाता है।

(६) गर्भवती माँ घी-सेवन करे तो गर्भस्थ शिशु बलवान, पुष्ट और बुद्धिमान बनता है।

(७) गाय के घी का सेवन हृदय को मजबूत बनाता है। यह कोलेस्ट्रॉल को नहीं बढ़ाता। दही को मथनी से मथकर बनाये गये मक्खन से बना घी हृदयरोगों में भी लाभदायी है।

(८) देशी गाय के घी में कैंसर से लड़ने व उसकी रोकथाम की आश्चर्यजनक क्षमता है।

ध्यान दें : घी के अति सेवन से अजीर्ण होता है। प्रतिदिन १० से १५ ग्राम घी पर्याप्त है।

नाक में घी डालने से – (१) मानसिक शांति व

मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। (२) स्मरणशक्ति व नेत्रज्योति बढ़ती है। (३) आधासीसी (माइग्रेन) में राहत मिलती है।

(४) नाक की खुश्की मिटती है।

(५) बाल झड़ना व सफेद होना बंद होकर नये बाल आने लगते हैं।

(६) शाम को दोनों नथुनों में २-२ बूँद गाय का घी डालने तथा रात को नाभि व पैर के तलुओं में गोघृत लगाकर सोने से गहरी नींद आती है।

मात्रा : ४ से ८ बूँद

गोघृत से करें वातावरण शुद्ध व पवित्र

(१) अग्नि में गाय के घी की आहुति देने से उसका धुआँ जहाँ तक फैलता है, वहाँ तक का सारा वातावरण प्रदूषण और आण्विक विकिरणों से मुक्त हो जाता है। मात्र १ चम्मच गोघृत की आहुति देने से एक टन प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है, जो अन्य किसी भी उपाय से सम्भव नहीं है।

(२) गोघृत और चावल की आहुति देने से कई महत्त्वपूर्ण गैसें जैसे - इथिलीन ऑक्साइड, प्रोपिलीन ऑक्साइड, फॉर्मल्डीहाइड आदि उत्पन्न होती हैं। इथिलीन ऑक्साइड गैस आजकल सबसे अधिक प्रयुक्त होनेवाली जीवाणुरोधक गैस है, जो शल्य-चिकित्सा (ऑपरेशन) से लेकर जीवनरक्षक औषधियाँ बनाने तक में उपयोगी है।

(३) मनुष्य-शरीर में पहुँचे रेडियोधर्मी विकिरणों का दुष्प्रभाव नष्ट करने की असीम क्षमता गोघृत में है।

****

(पृष्ठ ४० 'संत्संग समाचार' का शेष) पूर्णिमा दर्शन-सत्संग के निमित्त भक्तवत्सल पूज्य बापूजी पहुँचे **अहमदाबाद आश्रम**। दिल्ली व यहाँ दोनों स्थानों पर साधकों की तरफ से ब्राह्मण ने वैदिक मंत्रोच्चार के द्वारा एवं भक्तों ने मानसिक रूप से अपने गुरुदेव को रक्षासूत्र बाँधा।

पूज्य बापूजी २४ शाम को इंदौर आश्रम पहुँचे। **२५ अगस्त (शाम)** को **इंदौर** आश्रम में सत्संग-कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। २७ अगस्त को पूज्यश्री **सूरत** पहुँचे। **२८ व २९ अगस्त** के जन्माष्टमी महोत्सव में सत्संग-वर्षा के साथ मटकीफोड़ कार्यक्रम व विशाल संत सम्मेलन भी हुआ।

यहाँ भारतभर से आये संतों ने कुप्रचारकों को बता दिया कि सारा संत-समाज पूज्य बापूजी के साथ है और भ्रामक प्रचार से संत-समाज व धर्मप्रेमी, देशप्रेमी जनता को किसी भी प्रकार से भ्रमित नहीं किया जा सकता है।
(पढ़ें पृष्ठ ४)

यज्ञों का फल और किया हुआ महान तप भी इस जगत में मनुष्य को वैसा लाभ नहीं पहुँचा सकता, जैसा सदा किया हुआ गुरुपूजन पहुँचा सकता है। गुरूणां वैरनिर्बन्धो न कर्तव्यः कथंचन। नरकं स्वगुरुप्रीत्या मनसापि न गच्छति॥

गुरुजनों के साथ कभी वैर नहीं बाँधना चाहिए। अपने गुरु के प्रसन्न होने पर मनुष्य कभी मन से भी नरक में नहीं पड़ता। न ब्रूयाद् विप्रियं तेषामनिष्टं न प्रवर्तयेत्। विगह्य न वदेत् तेषां समीपे स्पर्धया क्वचित्॥

उन्हें जो अप्रिय लगे, ऐसी बात नहीं बोलनी चाहिए। जिससे उनका अनिष्ट हो, ऐसा काम भी नहीं करना चाहिए। उनसे झगड़कर नहीं बोलना चाहिए और उनके समीप कभी किसी बात के लिए होड़ नहीं लगानी चाहिए।

यद् यदिच्छन्ति ते कर्तुमस्वतंत्रस्तदाचरेत्। वेदानुशासनसमं गुरुशासनमिष्यते॥

वे जो-जो काम कराना चाहें, उनकी आज्ञा के अधीन रहकर वह सब कुछ करना चाहिए। वेदों की आज्ञा के समान गुरु की आज्ञा का पालन अभीष्ट माना गया है।

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२५ से ३१ जुलाई तक निवाई (राज.) में पूज्य बापूजी का निवास रहा । तत्पश्चात् **१ अगस्त (दोप.)** को बापूजी **लालसोट** पधारे । यहाँ भक्तों द्वारा बनाये गये नये आश्रम का उद्‌घाटन संतश्री के करकमलों से हुआ ।

१ अगस्त की रात्रि को ही पूज्य बापूजी **जयपुर** आश्रम पधारे । **२ अगस्त** को सबका चहेता बनने का राज बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''आप कहीं भी जायें तो अपनी अक्ल से, तन से, मन से, धन से दूसरे की सेवा हो जाय, ज्ञान बढ़े, तबीयत अच्छी रहे । 'मैं बड़ी बाई हूँ, मैं बड़ा सेठ हूँ...' यह अभिमान न करें और अपना व्यक्तिगत खर्च कम रखें ।तो वह आदमी बिल्कुल प्रभावशाली हो जायेगा, उसकी माँग बनी रहेगी ।'' इसके बाद बापूजी पहुँचे पुष्कर के डुंगरिया आश्रम में । यहाँ २ (शाम) से ३ (सुबह) तक पूज्यश्री का निवास रहा ।

३ (शाम) व ४ अगस्त (सुबह) को **पाली** में पूज्य बापूजी ने सत्संग-वर्षा की । **४ अगस्त (दोप.)** को **सुमेरपुर** में सत्संग का केवल एक सत्र ही होना था परंतु भक्तों की प्रार्थना व पुकार पर भक्तवत्सल गुरुवर ने ६ अगस्त (सुबह) तक वहाँ रुककर सभीको सत्संग-अमृत से परितृप्त कर दिया ।

६ अगस्त (दोप.) को सत्संग-गंगा की धारा का प्रवाह पहुँचा **सिरोही** में । इसका पूर्वनाम शिवपुरी था । १८ वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद प्यारे बापूजी को अपने बीच पाकर यहाँ के लोगों ने २४ घंटे से भी कम समय में सत्संग की पूरी व्यवस्था कर डाली व सत्संग-पिपासुओं से पंडाल खचाखच भर गया ।

सत्संग का अगला पड़ाव रहा **७ अगस्त** को कवि माघ की जन्मभूमि **भीनमाल** । इसका मूल नाम था 'श्रीमाल नगर' अर्थात् 'श्री' (लक्ष्मी) का नगर । **८ अगस्त** को **बाड़मेर**वासी पूज्य बापूजी को अपने पास पाकर खुशी से झूम उठे ।

९ अगस्त (शाम) को **बालोतरा** में सत्संग के बाद **१० व ११ अगस्त** को भक्ति के गढ़ **जोधपुर** में पूज्यश्री ने बहायी भक्ति व ज्ञान की सत्संग-गंगा । इस दौरान पूज्यश्री का निवास पाल गाँव, जोधपुर स्थित आश्रम में था । १२ से १६ अगस्त की सुबह तक पूज्य बापूजी का निवास मणई में एक किसान द्वारा बनवायी गयी कुटिया में था ।

१६ (दोप.) व १७ अगस्त को दिल्ली के रजोकरी आश्रम में निवास के बाद **१८ से २० अगस्त (सुबह)** तक रक्षाबंधन महोत्सव एवं पूनम दर्शन-सत्संग **दिल्ली** के रामलीला मैदान में हुआ । यहाँ प्रथम २ दिन मूसलधार वर्षा होने के बावजूद भी श्रद्धालुओं के सैलाब में कोई कमी नहीं आयी ।

२० (दोप.) व २१ अगस्त को रक्षाबंधन महोत्सव व **(शेष पृष्ठ ३९ पर)**

पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय के खिलाफ देशभर में लाखों लोगों ने सैकड़ों रैलियाँ, धरना-प्रदर्शन किये, फिर भी अधिकांश मीडिया ने यह सच्चाई समाज से छुपायी और कुछेक लोगों का विरोध प्रदर्शन बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया ।

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

पूज्य बापूजी के ऊपर लगे झूठे, मनगढ़ंत आरोप एवं उनकी गिरफ्तारी के विरोध में जाहिर विरोध-प्रदर्शन

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2013

न्यूयॉर्क | लंदन | दिल्ली | औरंगाबाद (महा.)

कठुआ (जम्मू-कश्मीर) | गुलबर्गा (कर्नाटक) | झाँसी (उ.प्र.) | छतरपुर (म.प्र.)

शाहपुरकंडी (पंजाब) | रतलाम (म.प्र.) | उदयपुर (राज.) | रायपुर (छ.ग.)

लखनऊ | नांदेड़ (महा.) | भुवनेश्वर (ओड़िशा) | नासिक

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

'A2Z' व 'सुदर्शन' जैसे संस्कृतिनिष्ठ विरले चैनलों ने पूज्य बापूजी के करोड़ों शिष्यों एवं जागृत जनता की आवाज समाज तक पहुँचायी, परंतु अन्य अनेक चैनलों ने चुप्पी साध ली, ऐसा क्यों ?

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. ✻ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ✻ Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.